वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित एवं संपादित अनुपम साहित्य

प्रकाशित पुस्तकें

१९४०

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें

१. मैं क्या हूँ ?
२. सूर्य चिकित्सा विज्ञान
३. प्राण चिकित्सा विज्ञान
४. परकाया प्रवेश
५. प्राण, मन और विचारों की विद्युत शक्ति

१९४१

१. स्वस्थ और सुंदर बनने की विधा
२. मानवीय विद्युत के चमत्कार
३. स्वर योग से दिव्यज्ञान
४. बुद्धि बढ़ाने के अद्‌भुत उपाय
५. धनवान और विद्वान बनने के गुप्त रहस्य
६. वशीकरण की सच्ची सिद्धि
७. इच्छानुसार पुत्र या पुत्री उत्पन्न करना
८. भोग में योग
९. बिना कष्ट के प्रसव
१०. मरने के बाद क्या होता है ?
११. क्या धर्म ? क्या अधर्म ?
१२. ईश्वर कहाँ ? कौन ? कैसा है ?

१९४२

१. जीव-जंतुओं की बोली समझना
२. पंचाध्यायी
३. जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्त्विक प्रकाश
४. गहनाः कर्मणो गति

१९४३

१. शक्ति संचय के पथ पर
२. आत्मगौरव की साधना
३. प्रतिष्ठा का उच्च सोपान
४. मित्र भाव बढ़ाने की कला
५. आंतरिक उल्लास का विकास
६. आगे बढ़ने की तैयारी
७. अध्यात्म धर्म का अवलंबन
८. ब्रह्मविद्या का रहस्योद्‌घाटन
९. ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग
१०. यम-नियम
११. आसन और प्राणायाम
१२. प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि
१३. तुलसी के अमृतोपम गुण
१४. आकृति देखकर मनुष्यों की पहचान
१५. सन् २००० और नवयुग

१९४४

१. मेस्मेरिज्म की अनुभवपूर्ण शिक्षा
२. ईश्वर और स्वर्गप्राप्ति का सच्चा मार्ग
३. विवेक सतसई
४. संजीवनी विद्या
५. हस्तरेखा विज्ञान

१९४५

१. गायत्री की चमत्कारी साधना
२. गृहस्थ योग
३. अमृत, पारस और कल्पवृक्ष की प्राप्ति
४. घरेलू चिकित्सा
५. बिना ओषधि के कायाकल्प
६. पंचतत्त्वों द्वारा सर्वरोगों की चिकित्सा

१९४६-४७

१. सफलता के तीन साधन
२. शिखा और यज्ञोपवीत की रहस्यमय विवेचना
३. अध्यात्म विद्या का प्रवेशद्वार

४. कुछ धार्मिक प्रश्नों का उचित समाधान
५. आत्मोन्नति का मनोवैज्ञानिक मार्ग
६. प्रत्यक्ष फलदायी साधनाएँ
७. वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

१९४८

१. योग के नाम पर मायाचार
२. जादूगरी या छल
३. अमृतकण

गायत्री महाविज्ञान के पाँच अनुपम ग्रंथ

१. गायत्री विज्ञान
२. गायत्री रहस्य
३. गायत्री के अनुभव
४. गायत्री तंत्र
५. गायत्री योग

१९४९

१. गायत्री महाविज्ञान : प्रथम भाग
२. गायत्री महाविज्ञान : द्वितीय भाग
३. स्त्री रोग चिकित्सा
४. बाल रोग चिकित्सा
५. यज्ञोपवीत से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति
६. गायत्री ही कामधेनु है
७. भारतीय संस्कृति का बीजमंत्र यज्ञोपवीत
८. गायत्री का वैज्ञानिक आधार
९. गायत्री की सर्वसुलभ साधनाएँ
१०. वेदशास्त्रों का निचोड़ गायत्री
११. गायत्री के चौदह रत्न—प्रथम भाग
१२. गायत्री के चौदह रत्न—द्वितीय भाग
१३. सर्वशक्तिमान

१९५०

१. पारिवारिक जीवन की समस्याएँ

१९५१

१. गायत्री महाविज्ञान : तृतीय भाग
२. गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार
३. गायत्री का मंत्रार्थ
४. गायत्री चित्रावली
५. विपत्ति निवारिणी गायत्री
६. स्त्रियों का गायत्री अधिकार
७. नीरोग जीवन का राजमार्ग
८. अनादि गुरुमंत्र गायत्री
९. सोऽहं महावाक्यं
१०. उल्लास का विकास

१९५३

१. गायत्री चालीसा
२. गायत्री चालीसा (सचित्र)
३. सत्संकल्प

१९५४

१. गायत्री की गुप्त शक्ति
२. सुख-शांतिदायिनी गायत्री
३. गायत्री से बुद्धि-विकास
४. गायत्री की दिव्यशक्तियाँ
५. गायत्री का अर्थ-संदेश
६. स्त्रियों की गायत्री-साधना
७. गायत्री उपासना कैसे करें ?
८. गायत्री से यज्ञ का संबंध
९. गायत्री यज्ञ विधान—प्रथम भाग
१०. गायत्री यज्ञ विधान—द्वितीय भाग

१९५५

१. गायत्री सहस्रनाम
२. गायत्री संक्षिप्त हवन विधि
३. गायत्री स्तोत्रम्

१९५७

१. वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ
२. सचित्र गायत्री शिक्षा
३. सूक्त संहिता
४. संस्कार पद्धति
५. व्रत और त्योहार
६. संक्षिप्त रामायण

७. प्रेरणाप्रद दृष्टांत (प्रथम खंड)
८. सरल चिकित्सा विज्ञान
९. कल्प चिकित्सा
१०. सत्य-धर्म की दीक्षा
११. हमारी पारिवारिक समस्याएँ
१२. जीवन संगीत
१३. समुद्र-मंथन का नवनीत
(धर्मशास्त्रों की शिक्षा और प्रेरणा)
१४. दैनिक जीवन में मनोवैज्ञानिक प्रयोग
१५. मधुर संबंधों का रहस्य
१६. यज्ञ क्यों करना चाहिए ?

१९५८

५२ पुस्तकों का गायत्री पुस्तकालय सेट

(अ) गायत्री का ज्ञान-विज्ञान और साधन

१. गायत्री माहात्म्य
२. गायत्री की दिव्यशक्ति
३. गायत्री द्वारा आत्मोत्कर्ष
४. गायत्री की सिद्धियाँ
५. गायत्री से ब्रह्म साक्षात्कार
६. गायत्री-साधना के चमत्कार
७. गायत्री से व्याधि-निवारण
८. गायत्री द्वारा भौतिक सफलताएँ
९. गायत्री से संकट-निवारण
१०. सचित्र गायत्री
११. मनुष्य जीवन की सार्थकता
१२. स्त्रियों का गायत्री अधिकार
१३. गायत्री के जगमगाते हीरे
१४. गायत्री उपनिषद्
१५. गोपनीय गायत्री तंत्र
१६. गायत्री और यज्ञोपवीत
१७. गायत्री की सुलभ साधना
१८. गायत्री से योग-साधना
१९. गायत्री हवन विधि
२०. गायत्री यज्ञ का महत्त्व
२१. यज्ञ और भारतीय संस्कृति
२२. विश्वव्यापी संकट का गायत्री से समाधान
२३. सामूहिक यज्ञ आयोजन
२४. गायत्री का ज्ञान-विज्ञान और साधन

(ब) गायत्री के एक-एक अक्षर की व्याख्या पर आधारित पुस्तकें

१. गायत्री की २४ शिक्षाएँ
२. ईश्वर का विराट रूप
३. ब्रह्मज्ञान का प्रकाश
४. शक्ति का सदुपयोग
५. धन का सदुपयोग
६. आपत्तियों में धैर्य
७. नारी की महानता
८. गृहलक्ष्मी की प्रतिष्ठा
९. प्रकृति का अनुसरण
१०. मानसिक संतुलन
११. सहयोग और सहिष्णुता
१२. इंद्रिय संयम
१३. पवित्र जीवन
१४. परमार्थ और स्वार्थ
१५. सर्वतोमुखी उन्नति
१६. ईश्वरीय न्याय
१७. विवेक की कसौटी
१८. जीवन और मृत्यु
१९. धर्म की सुदृढ़ धारणा
२०. प्राणघातक व्यसन
२१. सावधानी और सुरक्षा
२२. उदारता और दूरदर्शिता
२३. स्वाध्याय और सत्संग
२४. आत्मकल्याण का मार्ग
२५. गायत्री का ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान
२६. गायत्री की सुलभ साधना
२७. संतान के प्रति कर्त्तव्य
२८. शिष्टाचार और सहयोग

१९५९

गायत्री का छोटा सैट

१. गायत्री की महान महिमा

२. पापनाशिनी गायत्री
३. गायत्री की दैनिक साधना
४. नारियों की गायत्री उपासना
५. गायत्री की विशिष्ट साधनाएँ
६. गायत्री गीता
७. गायत्री परिवार का लक्ष्य
८. गायत्री यज्ञ का महत्त्व

विशिष्ट पुस्तकें

१. कल्प चिकित्सा
२. गायत्री यज्ञों की रूपरेखा
३. समाजसेवा के रचनात्मक कार्यक्रम
४. पशुबलि हिंदू धर्म पर कलंक है
५. संक्षिप्त गायत्री हवन विधि
६. गायत्री चित्रावली—द्वितीय भाग

१९६० (अ)

१. दैनिक गायत्री उपासना
२. गायत्री महायज्ञ का शांतिमय वातावरण में प्रभु प्रीत्यार्थ, महामंगलमय, ऋषिकल्प शास्त्रोक्त आयोजन
३. गायत्री यज्ञ का महत्त्व
४. गायत्री महायज्ञ और उसके बाद
५. गायत्री परिवार का लक्ष्य
६. गायत्री परिचय
७. अखण्ड ज्योति परिवार-युग निर्माण योजना-सदस्यों के लिए २० सूचनाएँ
८. अगले वर्ष के २४० गायत्री यज्ञ और युग निर्माण सम्मेलन
९. गायत्री परिवार का व्रतधारी आंदोलन
१०. अब श्रद्धा की परीक्षा का समय आ गया
११. गर्भ पोषक रसायन

१९६० (ब)

भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठतम धर्मग्रंथ, वैदिक साहित्य

१. ऋग्वेद, प्रथम खंड
२. ऋग्वेद, द्वितीय खंड
३. ऋग्वेद, तृतीय खंड
४. ऋग्वेद, चतुर्थ खंड
५. अथर्ववेद, प्रथम खंड
६. अथर्ववेद, द्वितीय खंड
७. यजुर्वेद
८. सामवेद

१०८ उपनिषद् तीन खंडों में

१. १०८ उपनिषद्, साधना खंड
२. १०८ उपनिषद्, ज्ञान खंड
३. १०८ उपनिषद्, ब्रह्मविद्या खंड

षड्दर्शन छह जिल्दों में

१. वेदांत दर्शन
२. सांख्य दर्शन
३. योग दर्शन
४. वैशेषिक दर्शन
५. न्याय दर्शन
६. मीमांसा दर्शन

२० स्मृतियाँ दो खंडों में

१. २० स्मृतियाँ—प्रथम खंड
२. २० स्मृतियाँ—द्वितीय खंड

पुराण

१. शिवपुराण, प्रथम खंड
२. शिवपुराण, द्वितीय खंड
३. विष्णुपुराण, प्रथम खंड
४. विष्णुपुराण, द्वितीय खंड
५. मार्कंडेयपुराण, प्रथम खंड
६. मार्कंडेयपुराण, द्वितीय खंड
७. हरिवंशपुराण, प्रथम खंड
८. हरिवंशपुराण, द्वितीय खंड
९. पद्मपुराण, प्रथम खंड
१०. पद्मपुराण, द्वितीय खंड
११. लिंगपुराण, प्रथम खंड
१२. लिंगपुराण, द्वितीय खंड
१३. मत्स्यपुराण, प्रथम खंड
१४. मत्स्यपुराण, द्वितीय खंड

१५. कूर्मपुराण, प्रथम खंड
१६. कूर्मपुराण, द्वितीय खंड
१७. स्कंदपुराण, प्रथम खंड
१८. स्कंदपुराण, द्वितीय खंड
१९. वायुपुराण, प्रथम खंड
२०. वायुपुराण, द्वितीय खंड
२१. अग्निपुराण, प्रथम खंड
२२. अग्निपुराण, द्वितीय खंड
२३. गरुड़पुराण, प्रथम खंड
२४. गरुड़पुराण, द्वितीय खंड
२५. भविष्यपुराण, प्रथम खंड
२६. भविष्यपुराण, द्वितीय खंड
२७. देवीभागवत, प्रथम खंड
२८. देवीभागवत, द्वितीय खंड
२९. वामनपुराण, प्रथम खंड
३०. वामनपुराण, द्वितीय खंड
३१. ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रथम खंड
३२. ब्रह्मवैवर्तपुराण, द्वितीय खंड
३३. कल्किपुराण
३४. सूर्यपुराण
३५. ब्रह्मपुराण, प्रथम खंड
३६. ब्रह्मपुराण, द्वितीय खंड
३७. नारदपुराण, प्रथम खंड
३८. नारदपुराण, द्वितीय खंड
३९. वाराहपुराण, प्रथम खंड
४०. वाराहपुराण, द्वितीय खंड
४१. कालिकापुराण, प्रथम खंड
४२. कालिकापुराण, द्वितीय खंड

अन्य वैदिक साहित्य

१. योगवासिष्ठ, प्रथम खंड
२. योगवासिष्ठ, द्वितीय खंड
३. गृह्यसूत्र
४. चौबीस गीताएँ, प्रथम खंड
५. चौबीस गीताएँ, द्वितीय खंड
६. देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप प्रथम भाग—विष्णु रहस्य
७. देववाद का वैज्ञानिक स्वरूप भाग दो—शिव रहस्य
८. मंत्र महाविज्ञान, प्रथम खंड
९. मंत्र महाविज्ञान, द्वितीय खंड
१०. मंत्र महाविज्ञान, तृतीय खंड
११. मंत्र महाविज्ञान, चतुर्थ खंड
१२. तंत्र महाविज्ञान, प्रथम खंड
१३. तंत्र महाविज्ञान, द्वितीय खंड
१४. वैदिक मंत्र विद्या
१५. तंत्र महासाधना
१६. उपासना महाविज्ञान
१७. शिव रहस्य
१८. तंत्र रहस्य
१९. ब्रह्मसूत्र
२०. तंत्र महासिद्धि
२१. तंत्र महाविद्या

१९६१

सद्ज्ञान प्रसार ट्रैक्ट माला

१. नैतिक पुनरुत्थान के पथ पर
२. जीवन सादा और विचार ऊँचे रखिए
३. जीवन को सेवामय बनाइए
४. स्वाध्याय नित्य ही करना चाहिए
५. सभ्यता शिष्टाचार में ही सन्निहित है
६. भारतीय संस्कृति की रक्षा कीजिए
७. मिल-जुलकर आगे बढ़िए
८. हम असंयमी न बनें
९. नारी का सम्मान तथा उत्थान किया जाए
१०. चोटी और जनेऊ की उपेक्षा न कीजिए
११. अन्न देवता का अपमान न हो
१२. गाली देने की गंदी आदत
१३. मांसाहार मानवता के विरुद्ध है
१४. चमड़े का उपयोग छोड़िए
१५. नशेबाजी के खतरों से सावधान
१६. कामुकता और अश्लीलता से बचिए
१७. दहेज के भयंकर दुष्परिणाम
१८. मृतकभोज बंद किया जाए
१९. जुआ एक सत्यानाशी विषवृक्ष
२०. पशुबलि मत कीजिए
२१. पंचकोशी साधना संबंधी विशेष ज्ञातव्य

१९६४

आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं साधनात्मक पुस्तकें

१. ईश्वर और उसकी प्राप्ति
२. अपना उद्धार आप करें
३. आत्मकल्याण का राजमार्ग
४. पंथ अनेक लक्ष्य एक
५. वेदों का दिव्य संदेश
६. आप सर्वशक्तिमान हैं
७. मनुष्य का मूल्यांकन
८. आशा की जीवन-ज्योति
९. विचारों की अलौकिक शक्ति
१०. संकल्पशक्ति के अद्‌भुत चमत्कार
११. प्रगति के पथ पर
१२. इन दुर्गुणों को छोड़िए
१३. सद्‌गुणों की सच्ची संपत्ति

मानव उत्थान

१. हम बदलें तो दुनिया बदले
२. समाज की अभिनव रचना
३. समस्त समस्याओं का एक ही हल
४. नए युग की नई प्रेरणा
५. हमारी युग निर्माण योजना
६. नए युग का सूत्रपात
७. विष से अमृत की ओर
८. शिखा और यज्ञोपवीत का रहस्य
९. मनुष्य में ईश्वर की झाँकी
१०. जीवन-संग्राम कैसे जीतें ?
११. प्रभावशाली वक्ता बनने की कला
१२. राष्ट्र की निर्मात्री नारी

पारिवारिक समस्याओं का हल

१. परिवार और उसका निर्माण
२. सुख-शांतिमय गृहस्थ

बाल-निर्माण साहित्य

१. शिशु जन्म से पूर्व
२. शिशु और अभिभावक
३. हमारे महान उत्तराधिकारी
४. बच्चे और उनका मनोविज्ञान
५. बालकों का नवनिर्माण
६. बालविकास की समस्याएँ
७. बच्चों को कैसे सुधारा जाए ?
८. बच्चों की शिक्षा-दीक्षा
९. बालकों को इन दुर्गुणों से बचाइए
१०. बालकों को इस तरह सुधारिए

आरोग्य रक्षा और प्राकृतिक चिकित्सा

१. आरोग्य रक्षा के रहस्य
२. बलवर्द्धक व्यायाम
३. शक्ति का स्रोत प्राणायाम
४. प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान
५. कल्प चिकित्सा
६. तंबाकू एक घातक विष है
७. तुलसी के चमत्कारी गुण

कथा-इतिहास और जीवन चरित्र

१. धर्मपुराणों की सत्कथाएँ
२. चरित्र निर्माण की कथाएँ
३. भारत की महान विभूतियाँ
४. संसार के महान पुरुष
५. बड़ों की बड़ी बातें
६. व्रत और त्योहार

कविता और गायन

१. युगसंदेश
२. युगगायन
३. युगवीणा
४. उद्‌बोधन
५. दोहा-अंत्याक्षरी

१९६५

संस्कारों और पर्वों की पृथक-पृथक . १२ पुस्तकें

१. श्रावणी पर्व विधान
२. पितृ अमावस्या पर्व विधान

३. विजयादशमी और दीपावली पर्व
४. गीता जयंती और वसंत पंचमी पर्व
५. शिवरात्रि और होलिका पर्व विधान
६. गायत्री जयंती और गुरुपूर्णिमा पर्व
७. पुंसवन और नामकरण संस्कार
८. अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म और विद्यारंभ
९. यज्ञोपवीत और वानप्रस्थ संस्कार
१०. विवाह संस्कार
११. मरणोत्तर और अंत्येष्टि संस्कार
१२. जन्मदिवसोत्सव, विवाहदिवसोत्सव

धर्ममंच से नवनिर्माण का प्रेरणाप्रद साहित्य

१. गीता कथा
२. संस्कार पद्धति
३. पर्वों की प्रेरणा और पद्धति
४. सत्यनारायण व्रत कथा
५. रामायण कथा
६. सत्यनारायण पद्यानुवाद
७. संक्षिप्त रामायण

नवनिर्माण के प्रेरणाप्रद ट्रैक्ट, कहानियाँ, कविताएँ एवं जीवनचरित

१. विवाह के आदर्श और सिद्धांत
२. तीन दिन का सत्यानाशी विवाहोन्माद
३. विवाहोन्माद के लिए बुद्धि क्यों बेच दी जाए?
४. विवाह-शादियों का असह्य अपव्यय
५. इस हृदयद्रावक स्थिति को कब तक सहा जाएगा?
६. ये कुरीतियाँ मिट रही हैं और मिटेंगी
७. विवाहों का वातावरण धर्मानुष्ठान जैसा रहे
८. आदर्श विवाहों की रूपरेखा
९. आदर्श विवाहों का प्रचलन कैसे हो?
१०. प्रगतिशील जातीय संगठनों की आवश्यकता
११. हम भाग्यवादी नहीं, कर्मवादी बनें
१२. अंधविश्वासी नहीं, विवेकशील बनिए
१३. अंधविश्वास से लाभ कुछ नहीं, हानि अपार है
१४. भिक्षा-व्यवसाय देश और समाज का कलंक
१५. मंदिर जनजागरण के केंद्र बनें
१६. उनसे, जो पचास के हो चले
१७. साधु की महान परंपरा और जिम्मेदारी
१८. ब्राह्मण अपना दायित्व सँभालें
१९. स्वच्छता मनुष्य का प्रथम गुरुमंत्र
२०. दर्शन तो करें पर इस तरह
२१. आलस्य छोड़िए, परिश्रमी बनिए
२२. पक्षपात त्यागें, औचित्य अपनाएँ
२३. मांसाहार मानवता के विरुद्ध है
२४. तंबाकू एक भयानक दुर्व्यसन
२५. प्राणियों के प्रति निर्दयता न करें
२६. अपव्यय का ओछापन
२७. मृतकभोज की क्या आवश्यकता ?
२८. नारी को तिरस्कृत न किया जाए
२९. अशिष्टता न कीजिए
३०. ईमानदारी का परित्याग न करें
३१. खाद्य समस्या और उसका हल
३२. आहार में संयम बरतें
३३. संतान की संख्या न बढ़ाइए
३४. गंदगी की घृणित असभ्यता
३५. शाकाहारी व्यंजन
३६. व्यायाम हमारी एक अनिवार्य आवश्यकता
३७. पुस्तकालय सच्चे देवालय
३८. निरक्षरता का कलंक
३९. परिवार को सुसंस्कृत कैसे बनाएँ ?
४०. हम सच्चे अर्थों में आस्तिक बनें
४१. संस्कारों की पुण्य-परंपरा
४२. पर्व और त्योहारों से प्रेरणा ग्रहण करें
४३. लोक-निर्माण के जनगायन
४४. विवाह-दिवसोत्सव कैसे मनाएँ?
४५. जन्म-दिवसोत्सव कैसे मनाएँ?
४६. गायत्री यज्ञों की विधि व्यवस्था
४७. गायत्री यज्ञों की विधि व्याख्या
४८. प्रबुद्ध व्यक्ति धर्मतंत्र सँभालें
४९. पुंसवन संस्कार विवेचन
५०. नामकरण संस्कार विवेचन
५१. अन्नप्राशन संस्कार विवेचन
५२. चूड़ाकर्म संस्कार विवेचन
५३. विद्यारंभ संस्कार विवेचन
५४. यज्ञोपवीत संस्कार विवेचन

५५. विवाह संस्कार विवेचन
५६. वानप्रस्थ संस्कार विवेचन
५७. अंत्येष्टि संस्कार विवेचन
५८. मरणोत्तर संस्कार विवेचन
५९. छात्रों का निर्माण अध्यापक करें
६०. हरिजन उत्कर्ष के लिए बड़े कदम उठें
६१. नारी उत्थान को महिलाएँ आगे आवें
६२. पशुबलि हिंदू धर्म का कलंक
६३. नव निर्माण के लिए जनसम्मेलन
६४. विधवा विवाह शास्त्र विरुद्ध नहीं

१९६७

६५. खाया कैसे जाए ?
६६. शरीर को स्वस्थ रखिए
६७. आरोग्य का आधार शारीरिक श्रम
६८. कपड़ों से जकड़े न रहिए
६९. सर्वोपयोगी सरल व्यायाम
७०. स्वस्थ रहना है तो दही खाइए
७१. कब्ज से कैसे बचें और कैसे छूटें ?
७२. श्वास सही तरीके से लीजिए
७३. दूध पीएँ तो इस तरह
७४. उत्कृष्ट और परिष्कृत जीवन
७५. मन की तुष्टि, आत्मा की दुर्गति
७६. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
७७. अपने दोषों को ढूँढ़ें और निकालें
७८. मरने से डरना क्या!
७९. कलात्मक जीवन जिएँ
८०. जिंदगी हँसते-खेलते जिएँ
८१. सुखी इस तरह रहा जा सकता है
८२. जीवन श्रेष्ठ व सार्थक बने
८३. जीवन का लक्ष्य भुला न दिया जाए
८४. संतोषी सदा सुखी
८५. मत असंतुष्ट रहिए
८६. अपना दृष्टिकोण बदलें
८७. असंतोष की आग में यों न जलें
८८. धन्योगृहस्थाश्रमः
८९. परिवार को सुसंस्कृत बनाएँ
९०. परिवार का पालन ही नहीं निर्माण भी
९१. सुखी और सफल दांपत्य जीवन में स्वर्ग का अवतरण
९२. क्या नारी इसी दुर्दशा में पड़ी रहेगी ?
९३. सुयोग्य नारी सुखी गृहस्थ
९४. पुत्र की कामना से उद्विग्न क्यों ?
९५. धन का उपार्जन और उपयोग
९६. मित्रता क्यों ? कैसे और किससे ?
९७. स्वाध्याय में प्रमाद न करें
९८. बोलिए तो, पर इस तरह
९९. बच्चों को बिगड़ने न दें
१००. बच्चों का भावनात्मक विकास
१०१. बच्चों का प्रशिक्षण घर की पाठशाला में
१०२. चरित्र का निर्माण सबसे बड़ा निर्माण
१०३. सद्गुण बढ़ाएँ, सुसंस्कृत बनाएँ
१०४. व्यक्तिवाद नहीं, समूहवाद
१०५. परोपकारी और सेवाभावी बनिए
१०६. स्वार्थ और परमार्थ का समन्वय
१०७. अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है
१०८. पहले अपने को सुधारें
१०९. उद्धरेदात्मनात्मानम्
११०. संयम हमारी एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता
१११. ज्ञानयोग की साधना
११२. कर्मयोग की रीति-नीति
११३. भक्तियोग का वास्तविक स्वरूप
११४. उपासना जीवन की अनिवार्य आवश्यकता
११५. हम ईश्वर से विमुख न हों
११६. गृहस्थ एक योग-साधना
११७. आत्मा की पुकार अनसुनी न करें
११८. हम सशक्त और साहसी बनें
११९. सफलता आत्मविश्वासी को मिलती है
१२०. जो करें, मन लगाकर करें
१२१. आराम नहीं, काम कीजिए
१२२. विनोद और उल्लास की प्रवृत्तियाँ
१२३. मित्रता करें, पर समझ-बूझकर
१२४. उतावली न करें, उद्विग्न न हों
१२५. दूसरों के दोष-दुर्गुण ही न देखा करें
१२६. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उद्विग्न न हों
१२७. कठिनाइयों से डरिए न, लड़िए

१२८. निराशा को पास फटकने न दें
१२९. आवेशग्रस्त होने की अपार हानि
१३०. विचारों की उत्कृष्टता प्रगति का मूलमंत्र
१३१. मानसिक स्थिति का स्वास्थ्य पर प्रभाव
१३२. न डरिए, न अशांत हूजिए
१३३. अहंकार में डूब मत जाइए।
१३४. सज्जनता की राह
१३५. हम दुर्बल नहीं, शक्तिशाली बनें
१३६. धर्मरक्षा से आत्मरक्षा होगी
१३७. मर्यादाओं का उल्लंघन न करें
१३८. समय का सदुपयोग करें
१३९. हम सुख-शांति से वंचित क्यों हैं ?
१४०. अपूर्णता से पूर्णता तक

कविता और कहानियों की नई ट्रैक्टमाला

कहानी ट्रैक्ट

१. समाधि दीप
२. ज्योति बुझती नहीं
३. भगवान के दरबार में
४. एक थे राजा
५. प्रेरणाप्रद कथा-गाथाएँ
६. सौम्य संवाद
७. अविस्मरणीय संस्करण, भाग एक
८. अविस्मरणीय संस्करण, भाग दो
९. अविस्मरणीय संस्करण, भाग तीन

कविता ट्रैक्ट

१. ज्योति किरण
२. नवयुग का नया निर्माण
३. अपना दीप जलाओ
४. अभिवंदना
५. अभिव्यंजना

१९६८

कविता ट्रैक्ट

६. युगनिमंत्रण
७. मंगल किरण
८. अवतार कथा
९. नवप्रभात
१०. प्रभात किरण

कहानी ट्रैक्ट

१. संत समागम
२. प्रेरक प्रसंग

ट्रैक्टमाला

१. टोना-टोटका, जंतर-मंतर
२. जीतता है सत्य ही, असत्य नहीं
३. बच्चों का निर्माण घर की पाठशाला में
४. झोला पुस्तकालय, अमृत कलश
५. ज्ञानयज्ञ का उद्देश्य और स्वरूप
६. गोरस बेचन हरिमिलन, एक पंथ दो काज
७. गृहस्थाश्रम एक कर्त्तव्य धर्म
८. आपको १०० वर्ष जीवित रहना चाहिए
९. बचत करना भी सीखिए
१०. हमारा स्वास्थ्य-संकट और उसका समाधान
११. तेजस्वी और मनस्वी संतति
१२. पतिव्रत की महिमा, पत्नीव्रत की गरिमा
१३. समस्याएँ अनेक, हल एक
१४. व्यक्ति का परिवर्तन ही युग-परिवर्तन
१५. सौभाग्य का द्वार, सम्मिलित परिवार
१६. यत्र नार्यस्तु पूज्यंते.....
१७. आंतरिक सुख ही वास्तविक सुख
१८. बुढ़ापे से टक्कर लीजिए
१९. खाते समय इन बातों का ध्यान रखें
२०. हमारी युग निर्माण योजना
२१. हमारा युग निर्माण सत्संकल्प
२२. संगठित परिवार, स्वरूप और आदर्श
२३. परिवार का विकास और संतुलन
२४. गृहस्थ ही नहीं, सद्गृहस्थ बनें
२५. अमृत और पारस
२६. सफलता के तीन साधन
२७. आत्मा और उसका तत्त्वदर्शन

जीवनचरित ट्रैक्टमाला

१. स्वामी विवेकानंद
२. महावीर स्वामी
३. ईश्वरचंद्र विद्यासागर
४. महर्षि कर्वे
५. ठक्कर बापा
६. महापुरुष लेनिन
७. महर्षि कार्ल मार्क्स
८. पवित्रात्मा बहा
९. ठाकुर दयानंद
१०. महाप्रभु चैतन्य
११. स्वामी केशवानंद
१२. प्रभु जगतबंधु
१३. महात्मा एंड्रूज
१४. अब्राहम लिंकन
१५. केशवचंद्र सेन
१६. राजा राममोहन राय
१७. गोपालकृष्ण गोखले
१८. श्रीमती एनी बेसेण्ट
१९. रामकृष्ण परमहंस
२०. महायोगी अरविंद
२१. दादाभाई नौरोजी
२२. संत कबीर
२३. महारानी अहिल्याबाई
२४. गुरु गोविंदसिंह
२५. टोयोहिको कागावा
२६. वीर शिवाजी
२७. दुर्गादास
२८. महात्मा फ्रांसिस
२९. स्वामी सहजानंद
३०. वीर सावरकर
३१. सिस्टर निवेदिता
३२. मास्टर प्रभुदयाल
३३. समर्थ गुरु रामदास
३४. संत तुकाराम
३५. कमाल पासा
३६. महापुरुष जैमिनी
३७. लाला लाजपतराय
३८. गेरीबाल्डी
३९. मदनमोहन मालवीय

१९६९

जीवनचरित ट्रैक्ट

४०. महात्मा गौतम बुद्ध
४१. विनोबा भावे
४२. लोकमान्य तिलक
४३. सुभाषचंद्र बोस
४४. रवींद्रनाथ टैगोर
४५. जमनालाल बजाज
४६. महादेव गोविंद रानाडे
४७. जुगलकिशोर बिरला
४८. मार्टिन लूथर किंग
४९. फ्लोरेंस नाइटिंगेल
५०. गणेशशंकर विद्यार्थी
५१. पुरुषोत्तमदास टंडन
५२. महापुरुष ईसा
५३. बंकिमचंद्र
५४. रानी लक्ष्मीबाई
५५. संत सुकरात
५६. श्रीमती सरोजिनी नायडू
५७. गंगाराम
५८. स्वामी श्रद्धानंद
५९. कर्मवीर कोलंबस
६०. विश्वेश्वरैया

कविता ट्रैक्ट

१. मणिमुक्ता
२. अर्चना गीत

गायत्री ट्रैक्ट

१. गायत्री का स्वरूप और रहस्य
२. गायत्री की गुप्त शक्ति
३. सर्वसुलभ गायत्री-साधना
४. गायत्री शक्ति का स्रोत—सविता देवता

५. गायत्री और उसकी प्राण-प्रक्रिया
६. गायत्री पंचमुखी और एकमुखी
७. गायत्री की पंचमुखी दैनिक साधना
८. गायत्री की विशेष साधनाएँ
९. गायत्री मंत्र की विलक्षण शक्ति
१०. गायत्री की असंख्य शक्तियाँ
११. गायत्री की सिद्धियाँ
१२. गायत्री शक्ति का नारी स्वरूप
१३. स्त्रियों का गायत्री अधिकार
१४. गायत्री और यज्ञोपवीत
१५. गायत्री और यज्ञ का संबंध

११७०

नव निर्माण का जीवन-साहित्य

१. युग निर्माण योजना के आदर्श और सिद्धांत —प्रथम भाग
२. युग निर्माण योजना के आदर्श और सिद्धांत —द्वितीय भाग
३. युग निर्माण की शिक्षण-प्रक्रिया
४. युग निर्माण की रूपरेखा और कार्यपद्धति
५. युग निर्माण चित्रावली—प्रथम भाग
६. युग निर्माण चित्रावली—द्वितीय भाग
७. नव निर्माण के रिकार्ड गीत

जीवनचरित

१. संत रामदेव
२. गुरु नानक
३. दयानंद सरस्वती
४. स्वामी रामतीर्थ
५. महात्मा गांधी
६. सरदार पटेल
७. बाबू राजेंद्रप्रसाद
८. देशबंधु चितरंजनदास
९. प्रफुल्लचंद्र राय
१०. सुरेंद्रनाथ बनर्जी
११. बाबा राघवदास
१२. देशभक्त राधामोहन गोकुल जी
१३. राजा महेंद्रप्रताप सिंह
१४. क्रांतिवीर भगतसिंह
१५. रानी दुर्गावती
१६. राष्ट्रमाता कस्तूरबा
१७. अवंतिका बाई गोखले
१८. जानकी मैया
१९. ऋषि टॉल्स्टॉय
२०. बुकर टी० वाशिंगटन
२१. डॉ० सनयात सेन
२२. गोल्डा मायर

गीत और संगीत (नाटिका)

१. भगवान राम
२. भगवान शिवशंकर
३. भगवान श्रीकृष्ण
४. गंगावतरण
५. दहेज का दानव
६. महाराजा हरिश्चंद्र
७. युग निर्माण संगीत, प्रथम भाग
८. युग निर्माण संगीत, द्वितीय भाग
९. युग निर्माण संगीत, तृतीय भाग
१०. युग निर्माण संगीत, चतुर्थ भाग
११. युग निर्माण संगीत, पंचम भाग
१२. युग निर्माण संगीत, षष्ठम भाग
१३. युग निर्माण संगीत, सप्तम भाग
१४. युग निर्माण संगीत,अष्ठम भाग
१५. युग निर्माण संगीत, नवम भाग
१६. युग निर्माण संगीत, दशम भाग

विज्ञप्तियाँ

१. आस्तिकता एवं उपासना का प्रयोजन
२. जीवन-लक्ष्य को समझें और उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करें
३. दुष्कर्मों से बचें, पापों का प्रायश्चित करें
४. गायत्री और यज्ञ भारतीय संस्कृति के माता-पिता
५. कर्त्तव्यपरायण मानवजीवन की आधारशिला
६. अपना महान महत्त्व समझें और अपने को सुधारें
७. सज्जनता और मधुर व्यवहार मनुष्यता की पहली शर्त

८. आहार और विहार का असंयम न बरतें
९. हँसती और हँसाती जिंदगी ही सार्थक
१०. अपना ही नहीं कुछ समाज का हितसाधन करें
११. उदार सहकारिता से हमारी उलझनें सुलझेंगी
१२. शिखा और यज्ञोपवीत भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रतीक
१३. नवयुवक सज्जनता और शालीनता सीखें
१४. आलस्य त्यागें, सुसंपन्न बनें
१५. हम अस्वच्छ न रहें, घृणित न बनें
१६. स्वाध्याय दैनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकता
१७. बेईमानी का नहीं, ईमानदारी का मार्ग अपनाएँ
१८. आवेशग्रस्त न हों, शांति और विवेक से काम लें
१९. धर्मतंत्र को प्रगतिशील बनने दिया जाए
२०. मंदिर आस्तिकता और सत्प्रवृत्तियाँ जगाने में लगें
२१. ढलती आयु का उपयोग इस तरह करें
२२. अध्यापक अपना महान उत्तरदायित्व निभाएँ
२३. भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है
२४. अनीति के आगे सिर न झुकाएँ
२५. त्योहार और संस्कार प्रेरणाप्रद पद्धति से मनाए जाएँ
२६. अन्नसंकट की चुनौती का सामना कैसे करें?
२७. प्राणियों के प्रति निर्मम और निष्ठुर न बनें
२८. बालविवाह एक अतिघातक कुप्रथा
२९. खरचीली शादियाँ हमें बेईमान और दरिद्र बनाती हैं
३०. पत्नी के पतिव्रत धर्म की तरह पत्नीव्रत भी पाला जाए
३१. बिना खरच के विवाहों का प्रचंड आंदोलन चल पड़े
३२. बेटे वाले व्यर्थ ही घाटा और बदनामी न उठाएँ
३३. संतान कितनी और क्यों पैदा करें?
३४. बालकों को जन्म ही न दें, उनका निर्माण भी करें
३५. संतान को स्वावलंबी भर बनाना ही पर्याप्त है
३६. परदा-प्रथा नारी के साथ एक नृशंस अन्याय
३७. अश्लीलता की बाढ़ हमें पतित बना रही है
३८. प्रबुद्ध नारी महिला-जागरण की कमान सँभालें
३९. व्यायाम समाज की एक महती आवश्यकता
४०. ऊँच-नीच की मान्यता अन्यायमूलक है
४१. मांस मनुष्यता को त्यागकर ही खाया जा सकता है
४२. तंबाकू का दुर्व्यसन छोड़ा ही जाना चाहिए
४३. मृतकभोज भी अविवेकपूर्ण न हो
४४. भिक्षावृत्ति का व्यवसाय न रहने दें
४५. भूत-पलीद और उद्भिज देवी-देवताओं का जंजाल
४६. अपव्यय और फैशनपरस्ती एक ओछापन
४७. वृक्षारोपण और संवर्द्धन एक अति आवश्यक कार्य
४८. गो-संरक्षण हमारी महती आवश्यकता
४९. प्रौढ़ों को साक्षर बनाया जाना युग की अनुपेक्षणीय माँग
५०. देशभक्त नवनिर्माण के काम में जुट जाएँ

१९७१-७२

जीवन-निर्माण की दिशाएँ, प्रेरणाएँ देने वाला सशक्त साहित्य

१. ज्ञानक्रांति के अग्रदूत
२. मानवता जिनकी ऋणी है
३. विश्व की महान महिलाएँ
४. विश्व की महान विभूतियाँ
५. शौर्य और साहस के सुदृढ़ स्तंभ
६. पीड़ित मानवता के अनन्य सेवक
७. पुरुषार्थी और पराक्रमी व्यक्तित्व
८. राष्ट्रमंदिर के कुशल शिल्पी
९. परिस्थितियाँ बाधक थीं, पर वे रुके नहीं
१०. धर्मोद्धारक और संस्कृति-संरक्षक
११. महापुरुषों के अविस्मरणीय संस्मरण
१२. कर्त्तव्य-धर्म की आख्यायिकाएँ
१३. आत्मोत्कर्ष की गौरवगाथाएँ
१४. दिव्य अनुभूतियाँ और दिव्य संदेश
१५. गृहस्थ सुख की साधना
१६. तमसो मा ज्योतिर्गमय
१७. अध्यात्मवादी भौतिकता अपनायी जाए
१८. ईश्वर और उसकी अनुभूति
१९. मानव जीवन निरर्थक न चला जाए
२०. रुग्ण समाज और उसका कायाकल्प
२१. महाकाल और युग-प्रत्यावर्तन-प्रक्रिया
२२. कल्प चिकित्सा
२३. प्रेरणाप्रद कथा-गाथाएँ
२४. साहसी जीतता है
२५. जीवन की सर्वोत्तम आवश्यकता-आत्मज्ञान
२६. हम उनकी जय गाएँ
२७. सुख का आधार सुसंस्कृत परिवार

२८. सौजन्यता के संदेशवाहक
२९. प्रेरणा भरे पावन प्रसंग
३०. जागो प्रहरी
३१. युगगायन
३२. सुख-शांति की साधना
३३. सद्गृहस्थ की साधना
३४. नशेबाजी की दूषित प्रवृत्तियाँ
३५. जाग्रति गान
३६. नेक बनें, नेकी की राह पर चलें
३७. अंतरंग जीवन का देवासुर संग्राम
३८. भव्य समाज की भव्य रचना
३९. जिंदगी जीने की कला
४०. अर्थ अनुशासन सीखिए
४१. सद्गुणों की सच्ची संपत्ति
४२. सुनसान के सहचर
४३. नारी को सुशिक्षित एवं स्वावलंबी बनाया जाए
४४. भारतीय संस्कृति की रक्षा कीजिए
४५. सर्वोपयोगी सुलभ साधना
४६. अंधविश्वास को उखाड़ फेंकिए
४७. आस्तिकता मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता
४८. शौर्य और साहस के प्रसंग
४९. हम बदलें तो दुनिया बदले
५०. अविस्मरणीय संस्मरण
५१. काव्य कैलाश
५२. प्रगतिशील महिलाएँ
५३. धर्माचरण से ही कल्याण होता है
५४. प्रगति के पथ पर
५५. दीर्घजीवन के रहस्य
५६. प्रेरक लघु कथाएँ
५७. हम समर्थ और सशक्त बनें
५८. केवल अपने लिए ही न जिएँ
५९. मनुष्य में देवत्व का उदय
६०. युग की पुकार अनसुनी न करें
६१. प्रेरक पौराणिक कथाएँ
६२. श्रद्धांजलि
६३. स्वस्थ और समर्थ जीवन
६४. मर्मस्पर्शी संस्मरण
६५. विवाहोन्माद के असुर से जूझा जाए
६६. हृदयस्पर्शी भावकथाएँ
६७. विचारों की अपार एवं अद्भुत शक्तियाँ
६८. प्रगतिपथ के पथिक
६९. आदर्श विवाहों की रूपरेखा
७०. भावी पीढ़ी का नवनिर्माण
७१. मन और उसकी प्रचंड शक्ति
७२. पर्व और त्योहारों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
७३. माता-पिता के कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व
७४. आसन और प्राणायाम
७५. कर्मयोग और कर्मकौशल
७६. बालकों का भावनात्मक निर्माण
७७. सामूहिक चेतना की अनिवार्य आवश्यकता
७८. जो जिएँ वे जीने की कला सीखें
७९. आंतरिक दुर्बलताओं से लड़ पड़िए
८०. स्वास्थ्य-रक्षा का वैज्ञानिक आधार
८१. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
८२. विश्वव्यापी विचार-क्रांति के दूत
८३. जीवनयज्ञ के उद्गाता महामानव
८४. महान महिलाओं की लोक-मंगल साधना
८५. बुद्धि, कर्म व साहस की धनी प्रतिभाएँ
८६. सरस, सफल, स्निग्ध जीवन
८७. जीवन की श्रेष्ठता और उसका सदुपयोग
८८. आत्मबल संपन्न सफल जीवन
८९. सफलता के बीज मंत्र
९०. आत्मा और परमात्मा का मिलन-संयोग
९१. अज्ञान के बंधन काटें, उन्मुक्त जीवन जिएँ
९२. बच्चों को उत्तराधिकार में धन नहीं गुण दें
९३. अपनी शक्तियाँ पहचानिए और आगे बढ़िए

१९७२

युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रमों का सुस्पष्ट विवेचन करने वाली नई ट्रैक्टमाला

आध्यात्मिक एवं साधनात्मक

१. सच्ची आस्तिकता अपनाएँ
२. उपासना जीवन की अनिवार्य आवश्यकता
३. जीवन-लक्ष्य और उसकी प्राप्ति
४. मन साधे जीवन सधे
५. अपूर्णता से पूर्णता की ओर

६. ज्ञानयोग की साधना
७. कर्मयोग की रीति-नीति
८. भक्तियोग का स्वरूप
९. मंदिर कैसे ? दर्शन क्यों ?
१०. परमार्थ में ही स्वार्थ भी
११. अपना शोधन जग की सेवा
१२. धर्मरक्षा से ही आत्मरक्षा
१३. प्रधानता आत्मा को दें, मन को नहीं
१४. सुख चाहें तो यों पाएँ
१५. अमृत, पारस, कल्पवृक्ष

जीवन-निर्माण

१. जिंदगी एक कला, एक खेल
२. श्रम है, सुख का हेतु
३. अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ
४. शक्ति और सामर्थ्य का स्रोत—संयम
५. कठिनाइयों को शत्रु नहीं, मित्र समझें
६. हम सुख-शांति से वंचित क्यों हैं ?
७. जीवन की उत्कृष्टता और सार्थकता
८. विचारों की उत्कृष्टता प्रगति का मूलमंत्र
९. दोष हटाएँ, उन्नति पाएँ
१०. मित्रता क्यों ? किससे और कैसे ?
११. आलोचना और गलतफहमियों से बचें
१२. अपना दृष्टिकोण ठीक रखें
१३. दुराग्रह छोड़ें औचित्य अपनाएँ
१४. असंतोष की आग से बचिए
१५. आत्मविश्वासी बनें, भय न करें
१६. स्थिर सुख की राह, संतोष
१७. परदोषदर्शन और अहंकार से बचें
१८. संतुलन सीखें, सफलता पाएँ
१९. समय का सदुपयोग करें
२०. आर्थिक संतुलन सीखिए
२१. बुढ़ापे से टक्कर लीजिए

स्वास्थ्य-संवर्द्धन

१. स्वच्छता मनुष्य का गौरव
२. व्यायाम हमारी अनिवार्य आवश्यकता
३. हम अशक्त क्यों ? सशक्त क्यों ?
४. तन-मन स्वस्थ रहे ऐसा आहार करें
५. तंबाकू एक घातक दुर्व्यसन
६. तुलसी के चमत्कार

परिवार-निर्माण

१. गृहस्थ एक योग-साधना
२. परिवार को सुसंस्कृत बनाएँ
३. मर्यादाएँ समझें और मानें
४. सफल दांपत्य, सुखी जीवन
५. पतिव्रत की महिमा, पत्नीव्रत की गरिमा
६. संयुक्त परिवार सुख का द्वार
७. परिवार का पालन ही नहीं, निर्माण भी
८. बालकों का भावनात्मक विकास
९. बच्चों का निर्माण घर की पाठशाला में
१०. बच्चों को बिगड़ने न दें
११. संतान की संख्या न बढ़ाइए
१२. पुत्र की कामना से उद्विग्न क्यों ?
१३. शिष्ट बनें, सज्जन कहलाएँ

युग निर्माण योजना

१. हमारी शतसूत्री युग निर्माण योजना
२. युग निर्माण का आधार व्यक्ति निर्माण
३. नवनिर्माण के लिए जनसम्मेलन
४. प्रबुद्ध वर्ग धर्मतंत्र सँभालें
५. अनेक समस्याओं का एक हल
६. अंधविश्वास से लाभ कुछ नहीं, हानि अपार है
७. हम बदलें तो दुनिया बदले
८. उनसे, जो पचास के हो चले
९. ब्राह्मण जागें, साधु चेतें
१०. व्यक्ति-परिवार एवं समाज-निर्माण
११. छात्रों का निर्माण अध्यापक करें
१२. शिक्षा अभियान चलाएँ
१३. हमारा स्वास्थ्य संकट और उसका समाधान
१४. नारी को तिरस्कार नहीं, प्रोत्साहन
१५. नारी जागरण हेतु महिलाएँ आगे आएँ
१६. पशु-उत्पीड़न एवं पशुबलि एक कलंक
१७. वेशभूषा शालीन रखिए
१८. खाद्यान्न संकट और उसके हल

१९. भिक्षा व्यवसाय देश और समाज का कलंक
२०. हरिजन उत्कर्ष के लिए बड़े कदम उठें
२१. क्या विधवा-विवाह शास्त्र विरुद्ध है?
२२. ज्ञानयज्ञ का उद्देश्य और स्वरूप
२३. झोला पुस्तकालय क्यों और कैसे?
२४. ज्ञान मंदिर सच्चे मंदिर
२५. धनबल से मनुष्यता रौंदी न जाए
२६. सत्कार्यों का अभिनंदन किया जाए
२७. जीवन भाग्यप्रधान नहीं, कर्मप्रधान है
२८. मंदिर जनजागरण के केंद्र बनें

विवाह आंदोलन

१. विवाह के आदर्श और सिद्धांत
२. तीन दिन का सत्यानाशी विवाहोन्माद
३. आदर्श विवाहों की रूपरेखा
४. आदर्श विवाहों का प्रचलन कैसे हो?
५. विवाहों में अपव्यय का कुचक्र तोड़ डालें

धर्ममंच से नवनिर्माण की प्रक्रिया

१. हमारी युग निर्माण योजना, प्रथम खंड
२. हमारी युग निर्माण योजना, द्वितीय खंड
३. धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण, प्रथम खंड
४. धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण, द्वितीय खंड

१९७३

महिला जागरण अभियान संबंधी साहित्य

१. सदस्यता प्रमाणपत्र
२. सहयोगी सदस्यता प्रमाणपत्र
३. महिला जागरण क्यों? कैसे?
४. महिला जागरण : दिशा और धारा
५. सामाजिक कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करें
६. नारी मीनार से खाई में कैसे जा गिरी?
७. प्रथम चरण का उत्तरदायित्व पुरुषों पर
८. नारी को प्रतिबंधित करके किसने क्या पाया?
९. नारी को उसका उचित स्थान देना ही होगा
१०. नारी दलित एवं प्रताड़ित न रहे, न रहने दी जाए
११. आदर्श के निर्वाह में नर, नारी से पीछे न रहे
१२. बहुत खो चुके, अब और न खोएँ
१३. प्राणवान संगठनों की सुनियोजित प्रक्रिया प्रारंभ हो
१४. लोक-शिक्षण के लिए धर्म-परंपरायुक्त प्रचार-प्रक्रिया
१५. प्रौढ़ महिला शिक्षा के लिए विशेष प्रबंध किया जाए
१६. इस प्राणतत्त्व को प्रखर बनाया जाए
१७. शांतिकुंज द्वारा महिला जागरण अभियान का सूत्र-संचालन
१८. अगले दिनों बहुत बड़े कदम उठाने होंगे
१९. स्वास्थ्य-संरक्षण इस तरह संभव होगा
२०. अधिक क्षमता हो तो प्रजनन का साहस करें
२१. परिवार को स्वस्थ परंपराओं का प्रशिक्षण केंद्र बनाया जाए
२२. पारिवारिक सद्भावना और सहकारिता को अधिकाधिक विकसित करें
२३. भारतीय संस्कृति में नारी का उच्च स्थान
२४. विवाह-शादियों में हमारा दृष्टिकोण साफ रहे
२५. नारी उत्थान सबसे बड़ी आवश्यकता
२६. नारी की सनातन गरिमा
२७. विवाहोन्माद का फन कुचल डालें
२८. नारी की क्षमता का सदुपयोग हो
२९. लड़ाई बीमारी से है, बीमार तो हमारा अंग है
३०. समाधान के ठोस उपाय
३१. महिला जागरण की संगठन प्रक्रिया
३२. न्याय नारी को भी मिलना चाहिए
३३. महिला जागरण विद्यालय की शिक्षण-प्रक्रिया

१९७४

१. रामायण सप्ताह
२. प्रेरणाप्रद दृष्टांत
३. श्रीराम कथा

१९७५

आध्यात्मिक साधनात्मक साहित्य

१. योग-साधना की पृष्ठभूमि
२. उपासना के तीन चरण—जप, तप और ध्यान
३. गायत्री यज्ञ और उसकी प्रेरणा
४. स्वर्ण जयंती साधना का विशेष साधनाक्रम

५. जीवन साधना के १४ स्वर्णिम सूत्र
६. भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि
७. अवतारचेतना के प्रतीक—राम और कृष्ण
८. अध्यात्मवाद ही क्यों ?
९. वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में धर्मचेतना

गीत

१. सहगान कीर्तन
२. सहगान संगीत
३. जाग्रति गीत
४. प्रबोध गीत

धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण

१. मानस ज्योति
२. मानस के मोती
३. रामायण संगीत शिक्षा
४. श्रीराम कथा
५. सरल व सर्वोपयोगी हवन विधि
६. वक्तृत्व कला एवं शक्ति
७. वक्तृत्व कला, भाग एक
८. वक्तृत्व कला, भाग दो
९. निरक्षरता का कलंक धो ही डालें
१०. मातृशक्ति गायत्री
११. प्रेमोपहार : आपके निकटवर्ती जन्मदिन पर एक अनुरोध एवं संदेश
१२. तीर्थयात्रा धर्म-परंपरा का पुनर्जीवन
१३. युग निर्माण के लिए पदयात्राएँ
१४. धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण : प्रयोग और उपलब्धियाँ
१५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
१६. रामचरितमानस के प्रेरक तत्त्व
१७. वाल्मीकि रामायण से प्रगतिशील प्रेरणा
१८. रामायण कीर्तन
१९. उत्कर्ष के लिए स्वयं आगे बढ़ें
२०. रामायण पारायण
२१. सत्यनारायण व्रत की प्रेरणा
२२. संक्षिप्त हवन विधि

१९७६

१. श्रीमद्भागवत के प्रेरक तत्त्व
२. श्रीमद्भागवत कथा
३. रामायण में नारी शक्ति
४. आस्तिकता की उपयोगिता और आवश्यकता
५. उत्कृष्ट चिंतन और उसकी प्रतिक्रिया
६. हरीतिमा वृद्धि में स्वार्थ-परमार्थ का समन्वय
७. स्वर्ण जयंती साधना का प्रचार और विस्तार
८. गरीब लोग अमीरों का स्वांग न अपनाएँ
९. साधना स्वर्ण जयंती का विशेष साधनाक्रम
१०. पुस्तकालय का महत्त्व देवालय जितना
११. विवाहोन्माद का फन कुचल डालें
१२. प्रौढ़ महिला शिक्षा योजना
१३. वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में धर्मचेतना
१४. शांतिकुंज की युगांतर चेतना
१५. महिला संगठन आवश्यकता एवं रूपरेखा
१६. परिवार-निर्माण के पाँच आधार
१७. सुसंतति का निर्माण
१८. गृहव्यवस्था के सूत्र
१९. सतत विकास की क्रमिक व्यवस्था
२०. महिला जागरण—पाँच उद्देश्य
२१. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक परिवर्तन
२२. नारी को रचनात्मक दिशा दी जाए
२३. जीवन की सार्थकता युग-साधना में
२४. अवांछनीय संतानोत्पादन रोकें
२५. सुख-शांति की जननी आस्तिकता
२६. भारतीय संस्कृति का मेरुदंड—वानप्रस्थ
२७. कला की शक्ति लोक-मंगल में लगे
२८. जीवन-व्यवसाय में ईश्वर की साझेदारी
२९. सुव्यवस्थित जीवन की रीति-नीति
३०. तीर्थयात्रा इस तरह की जाए
३१. नए युग के दो आधार—विज्ञान और अध्यात्म
३२. संपदाएँ बढ़ाएँ, पर शालीनता न खोएँ
३३. आत्मोत्कर्ष का साधना-मार्ग
३४. श्रमशीलता एक तप-साधना
३५. हम राजनीति में भाग क्यों नहीं लेते ?
३६. मालिकों को जगाओ, प्रजातंत्र बचाओ

३७. महत्त्वाकांक्षाओं की सीमा-मर्यादा
३८. आध्यात्मिक साम्यवाद
३९. सभ्य समाज की अभिनव संरचना

१९७७

१. सुसंस्कृत परिवार की पृष्ठभूमि
२. उपासना की महत्ता एवं विधि-व्यवस्था
३. जीवन-साधना—प्रयोग और सिद्धियाँ
४. आत्मोत्कर्ष का संबल—स्वाध्याय
५. शक्तिसंचय का स्रोत—संयम
६. सेवा-साधना और उनके सिद्धांत
७. सेवाधर्म और उसका स्वरूप
८. युग निर्माण सत्संकल्प की दिशाधारा
९. समस्त समस्याओं का समाधान—अध्यात्म
१०. आत्मशक्ति से युगशक्ति का उद्भव
११. धर्मतंत्र की गरिमा और क्षमता
१२. धर्मचेतना और जनजागरण
१३. वानप्रस्थ-परंपरा का पुनर्जागरण
१४. महिला जागरण आंदोलन
१५. युग-परितर्वन की पृष्ठभूमि और रूपरेखा—भाग १
१६. युग-परिवर्तन की पृष्ठभूमि और रूपरेखा—भाग २
१७. जन्मदिवसोत्सव : एक प्रेरक पर्व
१८. लोक-जागरण के लिए जनसम्मेलन
१९. चल पुस्तकालय : ज्ञानमेध
२०. नवनिर्माण की सत्र-शृंखला

व्यक्ति निर्माण

१. भारतीय संस्कृति की जननी—गायत्री
२. भारतीय धर्म का पिता—यज्ञ
३. गायत्री महाशक्ति की सर्वोपयोगी उपासना
४. गायत्री अनुष्ठान और उसका विधि-विधान
५. गायत्री-साधना संबंधी शंका समाधान
६. आत्मोत्कर्ष के चार आधार
७. हर दिन नया जन्म, हर रात नई मौत
८. नवरात्र का पावन पर्व
९. आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता
१०. प्रभु समर्पित जीवन
११. मनुष्य शरीर की गौरव-गरिमा
१२. आत्मिक प्रगति के चार चरण
१३. अंतर्जगत का देवासुर संग्राम
१४. आत्मनिर्माण जीवन की महान सफलता
१५. युग-परिवर्तन और ज्ञानयज्ञ
१६. स्वाध्याय की उपेक्षा न करें
१७. दिव्य विभूतियाँ श्रद्धालु को ही मिलती हैं
१८. विद्ययाऽमृतमश्नुते
१९. विचारशक्ति की महिमा और गरिमा
२०. मानवीय प्रगति का आधार—सहकार
२१. साहसी बनें, सफलता पाएँ
२२. मधुर और सारगर्भित भाषण
२३. कठिनाइयाँ व्यक्तित्व को प्रखर बनाती हैं
२४. पुरुषार्थ और पराक्रम की शक्ति-सामर्थ्य
२५. उत्कृष्ट जीवन की कलाकारिता
२६. प्रसन्नता अपने जीवन से उगाइए
२७. मनोविकारों के दुष्परिणाम
२८. मन:स्थितियों से परिस्थितियों का निर्माण
२९. दुराग्रह छोड़ें, तथ्य अपनाएँ
३०. सफल जीवन की रीति-नीति
३१. प्रगति-पथ पर आगे बढ़िए
३२. धरती सत्य पर टिकी है
३३. सफल जीवन की पगडंडियाँ
३४. दु:खों के कारण और उनके निवारण
३५. अपने आप पर भरोसा करें
३६. दांपत्य जीवन के स्वर्णिम सूत्र
३७. मांसाहार मानवता का अपमान
३८. अश्लील चिंतन का पतन-गर्त
३९. दीर्घजीवन के रहस्य
४०. जाग्रत आत्माओं को नवयुग का संदेश
४१. सुगृहिणी की गृह व्यवस्था
४२. महिला जागरण—उद्देश्य एवं कार्यक्रम
४३. महिला जागरण आंदोलन

१९७८

अध्यात्म का वैज्ञानिक प्रतिपादन

१. विवाद से परे, ईश्वर का अस्तित्व
२. ईश्वर कौन? कहाँ? कैसा है?

३. दृश्य जगत के अदृश्य संचालन-सूत्र
४. चेतना की प्रचंड क्षमता—एक दर्शन
५. असीम पर निर्भर ससीम जीवन
६. मनुष्य चलता-फिरता पेड़ नहीं है
७. पाँच प्राण, पाँच देव
८. दिव्य शक्तियों का उद्‌भव प्राणशक्ति से
९. मानवीय क्षमता असीम, अप्रत्याशित
१०. अणु में विभु, गागर में सागर
११. आत्मा न नर है, न नारी
१२. मानवीय मस्तिष्क विलक्षण कंप्यूटर
१३. अतींद्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि
१४. जड़ के भीतर विवेकवान चेतना
१५. शरीर की अद्‌भुत क्षमताएँ और विलक्षणताएँ
१६. मस्तिष्क प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष
१७. क्या धर्म अफीम की गोली है ?
१८. विज्ञान को शैतान बनने से रोकें
१९. धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं,पूरक
२०. पुनर्जन्म एक ध्रुव सत्य
२१. स्वर्ग और नरक की स्वचालित प्रक्रिया
२२. तात्त्विक दृष्टि से बंधन मुक्ति
२३. मरें तो सही, पर बुद्धिमत्ता के साथ
२४. भूत कैसे होते हैं ? क्या करते हैं ?
२५. पितरों को श्रद्धा दें, वे शक्ति देंगे
२६. सपने झूठे भी, सच्चे भी
२७. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२८. जीव-जंतु बोलते भी हैं, सोचते भी हैं
२९. आध्यात्मिक काम विज्ञान
३०. संसारचक्र की गति, प्रगति
३१. असामान्य एवं विलक्षण, किंतु संभव और सुलभ
३२. मनुष्य गिरा हुआ देवता या उठा हुआ पशु
३३. दृश्य जगत की अदृश्य पहेलियाँ
३४. हम सब एकदूसरे पर निर्भर
३५. चेतना का सहज स्वभाव : स्नेह, सहयोग
३६. सहृदयता आत्मिक प्रगति के लिए अनिवार्य
३७. युगशक्ति गायत्री का अभिनव अवतरण
३८. बच्चे बढ़ाकर अपने पैरों कुल्हाड़ी न मारें
३९. ब्रह्मवर्चस् की ध्यान-धारणा
४०. कुंडलिनी महाशक्ति और उसकी संसिद्धि
४१. सर्वोपयोगी गायत्री साधना
४२. गायत्री के पाँच मुख पाँच दिव्य कोश

१९७९

गायत्री महाविद्या पर प्रकाश डालने वाला साहित्य

१. गायत्री-साधना और यज्ञ-प्रक्रिया
२. गायत्री की सिद्धि और शक्ति
३. गायत्री की युगांतरीय चेतना
४. गायत्री की प्रचंड प्राण-ऊर्जा
५. गायत्री की उच्चस्तरीय पाँच साधनाएँ
६. देवताओं, अवतारों और ऋषियों की उपास्य गायत्री
७. गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार
८. गायत्री का सूर्योपस्थान
९. गायत्री और यज्ञ का अन्योन्याश्रय संबंध
१०. गायत्री-साधना से कुंडलिनी जागरण
११. गायत्री का ब्रह्मवर्चस्
१२. गायत्री पंचमुखी, एकमुखी
१३. महिलाओं की गायत्री-साधना
१४. गायत्री के दो पुण्य प्रतीक—शिक्षा और यज्ञोपवीत
१५. गायत्री का हर अक्षर शक्तिस्रोत
१६. गायत्री-साधना की सर्वसुलभ विधि
१७. गायत्री पंचरत्न
१८. गायत्री की अनुष्ठान एवं पुरश्चरण साधनाएँ
१९. गायत्री की २४ शक्तिधाराएँ
२०. गायत्री विषयक शंका-समाधान
२१. गायत्री मंत्रलेखन बड़ा
२२. गायत्री मंत्रलेखन छोटा

१९८०

परिवार निर्माण का सैट

१. युगसृजन का आरंभ परिवार निर्माण से
२. परिवार निर्माण की उपयोगिता समझी जाए
३. संयुक्त परिवार के संयुक्त उत्तरदायित्व
४. परिवारों में सुसंस्कारिता का वातावरण
५. घर के वातावरण में स्वर्ग का अवतरण

६. नव-रत्नों की खदान सुसंस्कृत परिवार
७. गृहस्थ में प्रवेश से पूर्व उसकी जिम्मेदारी समझें
८. विवाह यज्ञ है, उसे उद्धत, उत्पात जैसा न बनाएँ
९. सफल दांपत्य जीवन के मौलिक सिद्धांत
१०. घर की सज्जा और सुव्यवस्था
११. नारी शृंगारिकता नहीं, पवित्रता है
१२. नारी-उत्थान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता
१३. नारी की गरिमा गिराने में घाटा ही घाटा
१४. आधी जनशक्ति अपंग न रहे
१५. शिक्षित नारी आगे आए, अपने वर्ग को उठाए
१६. अभिभावकों और बच्चों के बीच भावनात्मक आदान-प्रदान
१७. बच्चों के शासक नहीं, सहायक बनें
१८. बच्चों की शिक्षा ही नहीं, दीक्षा भी आवश्यक
१९. नारी को रमणी न मानें, जननी का सम्मान दें
२०. सुसंस्कारिता की प्राथमिक प्रयोगशाला परिवार-संस्था
२१. सद्भाव और सहकार पर ही परिवार संस्था निर्भर
२२. अक्षुण्ण स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु एक शाश्वत राजमार्ग

आध्यात्मिक जीवन के प्रेरक ग्रंथ

१. आत्मा वा रे ज्ञातव्य:
२. उपासना का तत्त्वदर्शन और स्वरूप
३. भक्तिपथ की जीवन-ज्योति
४. अध्यात्म दृष्टिकोण और अनंत आत्मबल
५. दो महान अवलंबन—आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास
६. सदाचरण और मर्यादा पालन
७. सत्कर्म, सद्ज्ञान और सद्भाव का संगम
८. सत्य को पूर्वाग्रहों में न बाँधें
९. अंध परंपराएँ छोड़ें भी, तोड़ें भी
१०. कुरीतियों का कुचक्र तोड़ना ही होगा
११. नियामक सत्ता का नियंत्रण न तोड़ें
१२. उपभोग नहीं, उपयोग
१३. मनोविकार सर्वनाशी महाशत्रु
१४. सद्विचारों की सृजनात्मक शक्ति
१५. व्यक्तित्व के परिष्कार में श्रद्धा ही समर्थ
१६. सात्त्विक जीवनचर्या और दीर्घायुष्य
१७. असंयम बनाम आत्मघात
१८. संकल्पशक्ति की प्रचंड प्रतिक्रिया
१९. स्वाध्याय, सत्संग और चिंतन-मनन
२०. आत्मीयता का माधुर्य और आनंद
२१. कठिनाइयों की कसौटी पर खरे उतरें
२२. सिद्धिदात्री वाक्-साधना
२३. दो घिनौने-मुफ्तखोर और कामचोर
२४. सफलता के चार सूत्र
२५. जीवन की दिशाधारा और उसका सार्थक सुनियोजन
२६. साधना से सिद्धि के आधारभूत सिद्धांत
२७. ईश्वर से साझेदारी हर दृष्टि से नफे का सौदा

नवयुग अवतरण के सूत्र और कार्यक्रम

१. प्रज्ञावतार का स्वरूप और क्रियाकलाप
२. ध्वंस और सृजन की सुस्पष्ट संभावना
३. वातावरण के परिवर्तन का आध्यात्मिक प्रयोग
४. मनुष्य की बुद्धि और भावी विनाश
५. नवसृजन के शक्ति-संस्थान
६. युगसृजन के आरंभिक चरण
७. युगशिल्पियों की गलाई और ढलाई
८. महाप्रज्ञा की साधना एवं ब्रह्मवर्चस् की सिद्धि
९. युग-परिवर्तन क्यों और किसलिए?
१०. प्रज्ञा अभियान का स्वरूप एवं उसकी उपलब्धियाँ
११. स्वाध्याय-मंडल की स्थापना-कल्पवृक्ष
१२. तीर्थसेवन की पुण्य परंपरा का पुनर्जीवन
१३. नवसृजन का एक समर्थ एवं सशक्त प्रयास
१४. ब्रह्मवर्चस् की पंचाग्नि विद्या
१५. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान—प्रयोजन और प्रयास

प्रवासी भारतीयों के लिए लिखी गई पुस्तकें

१. देव संस्कृति व्यापक बनेगी, सीमित न रहेगी
२. प्रवासी भारतीयों में सांस्कृतिक चेतना जागी
३. सिद्धिदायक साधनाओं के परीक्षित प्रयोग

अन्य पुस्तकें

१. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग एक
२. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग दो
३. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग तीन
४. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग चार
५. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग पाँच

६. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग छह
७. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग सात
८. स्लाइड प्रोजेक्टर गाइड, भाग आठ

प्रज्ञा साहित्य (१२० पुस्तकें)

१. आध्यात्मिकता का प्राण सदाचरण
२. अक्षय स्वास्थ्य कैसे पाएँ
३. आत्मविश्वास के लिए सेवा-साधना अनिवार्य
४. आकांक्षाएँ नियंत्रित एवं उद्देश्यपूर्ण हों
५. आत्मबल जीवन की सर्वोपरि संपदा
६. आत्मबल संपादन के चार प्रमुख आधार
७. आहार संतुलन रखें, अपच से बचें
८. आधि-व्याधियों की बाढ़ और उनकी रोक-थाम
९. आलस्य और प्रमाद दु:ख-दारिद्र्य के उत्पादनकर्त्ता
१०. अवतार का प्रयोजन और स्वरूप
११. अंतरिक्ष विज्ञान और युग-प्रत्यावर्तन
१२. आत्मविस्तार का प्रशिक्षण परिवार रूपी पाठशाला में
१३. अस्वच्छता का अभिशाप मिटाना ही सबसे बड़ी सेवा
१४. अनुशासित छात्र ही प्रगतिशील समाज के कर्णधार
१५. अध्यात्मपरक शिक्षा के मूलभूत आधार
१६. आसन उपचार से आरोग्य की प्राप्ति
१७. अध्यात्म की आधारशिला मन की स्वच्छता
१८. एक नाव में बैठे हम सब
१९. एक ही समस्या, एक ही समाधान
२०. बच्चे सुसंस्कारी कैसे बनें ?
२१. व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा और विद्या के समन्वय से
२२. बजट बनाकर खरच करें
२३. वृक्षारोपण को देवाराधना जितना महत्त्व दें
२४. बीमारियाँ मन में उपजतीं और तन में पनपतीं
२५. विचार-क्रांति युग की प्रमुख आवश्यकता
२६. बेरोजगारी की समस्या ऐसे सुलझेगी
२७. विनोदवृत्ति को पतनोन्मुख न होने दें
२८. व्यक्तित्व निर्माण का प्रारंभिक चरण किशोरावस्था
२९. बड़प्पन नहीं, महानता कमाएँ
३०. बालकों में सत्प्रवृत्ति का बीजारोपण
३१. व्यक्तित्व निर्माण के चार स्वर्णिम सूत्र
३२. व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला—परिवार संस्था
३३. ब्रह्मवर्चस् की अतिफलदायी चांद्रायण साधना
३४. छिद्रान्वेषी नहीं, गुणग्राहक बनें
३५. चिरयौवन का वरदान सबके लिए
३६. दानशीलता में गरीबी बाधक नहीं
३७. दूध के दो विकल्प—सोयाबीन और मूँगफली
३८. धर्मचर्चा ही नहीं, धर्मपरायणता भी आवश्यक
३९. धर्म का तत्त्वदर्शन
४०. गृहस्थ रूपी तपोवन में नारी की भूमिका
४१. हँसें तो, पर उपहास न करें
४२. हँसती-हँसाती जिंदगी ही सार्थक
४३. हरामखोरी भयानक दुर्गुण, भीषण दुर्बुद्धि
४४. जीवन-व्यापार की सफलता का आधार—शालीनता
४५. जो सोचें, रचनात्मक सोचें
४६. ज्योतिर्विदों की दृष्टि में युगसंधि
४७. जीवनयात्रा का एक भटकाव—नशेबाजी
४८. जिंदगी एक कला, एक खेल
४९. कर्मयोग और जीवन-साधना की सिद्धि
५०. कर्त्तव्यनिष्ठ ही सच्ची धार्मिकता
५१. कर्म की उत्कृष्टता, तत्परता और तन्मयता से
५२. कामचोरी एक घातक मनोवृत्ति
५३. कुरीतियों का उन्मूलन आवश्यक
५४. कामशक्ति का सदुपयोग किया जाए
५५. खिन्नता छोड़ें, प्रसन्नता अपनाएँ
५६. मनोरंजन की आड़ में कामुकता का विषपान न हो
५७. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
५८. मानवी प्रगति पारस्परिक सहयोग पर आधारित
५९. मर्यादा पालें, उच्छृंखल न बनें
६०. मानव में देवत्व का उदय, समय की माँग
६१. नारी की गरिमा का पुनरोदय
६२. नवयुग की आधारशिला सद्भावयुक्त श्रद्धा
६३. नर और नारी एकसमान
६४. प्रसन्नता हर स्थिति में संभव
६५. प्रगति, शांति और प्रसन्नता
६६. पारिवारिक प्रगति में हर सदस्य का योगदान
६७. प्रसन्नता और प्रफुल्लता की कुंजी
६८. प्रसन्नता अपने भीतर से उगाइए
६९. प्रज्ञा संस्थानों के दस कार्यक्रम
७०. प्रसन्नता की पारसमणि किसी भी स्थिति में न गँवाएँ

७१. परिवार का पालन ही नहीं, निर्धारण भी
७२. परावलंबन पतन और पराभव का प्रधान कारण
७३. परिवारों में भाव-संवेदनाएँ जीवंत रहें
७४. पड़ोसी धर्म का निर्वाह करें
७५. प्रतीक उपासना की आवश्यकता और उपयोगिता
७६. परिवार में धार्मिक वातावरण बनाएँ
७७. पिता-पुत्र के संबंध सौहार्दपूर्ण हों
७८. परमार्थ में ही सच्ची ईश्वराराधना
७९. राष्ट्र के भावी कर्णधारों पर समुचित ध्यान दिया जाए
८०. स्वास्थ्य-संवर्द्धन की दिशा में दो महत्त्वपूर्ण कदम
८१. समाज का पुनर्निर्माण अतीव आवश्यक
८२. सत्य ही जीतता है, असत्य नहीं
८३. समाजऋण को चुकाने आगे आएँ
८४. शिक्षक समुदाय अपना उत्तरदायित्व निभाने आगे आए
८५. समय का सदुपयोग करें, समृद्ध बनें
८६. शुभ ही सोचें, शुभ ही बोलें
८७. समाज की प्रगति का आधार परिवार-निर्माण
८८. सुसंस्कारिता के पंचशील
८९. सभ्य समाज का स्वरूप और आधार
९०. सर्वसुलभ पोषक आहार स्वास्थ्य का आधार
९१. संत, सुधारक और शहीद
९२. संयुक्त परिवार का आधार—स्नेह और सहकार
९३. सद्गुणों की सौंदर्य-सज्जा
९४. स्वस्थ मनोरंजन ही उपयोगी
९५. शिक्षा का आधार ही समाज की प्रगति का मूल आधार
९६. समग्र प्रगति की रीति-नीति
९७. साहस बिना गति नहीं, प्रगति नहीं
९८. स्वच्छता और सादगी में ही मनुष्यता का गौरव सन्निहित है
९९. स्वाद के नाम पर अखाद्य भक्षण
१००. स्वास्थ्य-संकट और उसका हल
१०१. सुखद संसार की संरचना विवेकदृष्टि पर निर्भर
१०२. स्रष्टा की अवतरण प्रक्रिया
१०३. संधिकाल की शक्ति-संचार साधना
१०४. संसार का सबसे बड़ा परमार्थ—सेवाधर्म
१०५. श्रद्धा का विस्तार नवयुग का आधार
१०६. टहलना एक अति उपयोगी और सरल व्यायाम
१०७. ऊँचा उठना हो तो ऊँचा ही सोचें
१०८. उल्लास की आकांक्षा कुमार्गगामी न बनें
१०९. उपासना ही नहीं, साधना भी
११०. उत्कृष्टतासंपन्न दिव्य जीवन जिएँ
१११. उपवास एक समग्र एवं समर्थ उपचारपद्धति
११२. उतार-चढ़ाव ही जीवन है
११३. यज्ञ एक समग्र उपचार-प्रक्रिया
११४. युग की पुकार अनसुनी न करें
११५. युग-परिवर्तन के आधारभूत तथ्य
११६. युग-अवतार प्रज्ञावतार
११७. योगः कर्मसु कौशलम्
११८. यह कुरुचिपूर्ण प्रदर्शन
११९. युग-परिवर्तन का यही उपयुक्त समय
१२०. वसुधैव कुटुंबकम् का स्वप्न साकार होकर रहेगा

प्रज्ञा साहित्य द्वितीय सेट

१२१. अनीति एवं अनाचार मानवी पौरुष को एक चुनौती
१२२. सेवा-साधना के कुछ अनिवार्य मापदंड
१२३. विचारशक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी सामर्थ्य
१२४. मानवी गरिमा की सार्थकता सेवा-साधना
१२५. काम-उल्लास का सृजनात्मक उपयोग
१२६. धर्म और विज्ञान के समन्वय में ही कल्याण
१२७. समय को साधें, जो चाहें सो पाएँ
१२८. समाज की प्रगति का आधार—सुदृढ़ परिवार
१२९. जीवन-संग्राम ही वास्तविक महाभारत
१३०. दुष्प्रवृत्तियों से लड़ें, पनपने न दें
१३१. देव संस्कृति की गरिमा और महिमा
१३२. शारीरिक स्वच्छता स्वाध्याय के लिए अनिवार्य
१३३. माता ही बच्चों को सुसंस्कारी बनाती है
१३४. नारी समुदाय की साक्षरता पर समुचित ध्यान दिया जाए
१३५. तीर्थयात्राओं से जनजागरण
१३६. सुव्यवस्थित जीवन अध्यात्म का प्रथम चरण
१३७. सशक्त और समर्थ प्रजातंत्र के मूलभूत आधार
१३८. लोकसेवा साधना है, व्यवसाय नहीं
१३९. आत्मानुशासन का प्रशिक्षण अध्यात्म की पाठशाला में
१४०. सौभाग्य मात्र पुरुषार्थ का प्रतिफल
१४१. एकता और आत्मीयता की सरल सद्भावना
१४२. आत्मीयता का अमृत और उसका रसास्वादन

१४३. आत्मज्ञान और आत्मकल्याण का तत्त्वदर्शन
१४४. कायरता और भीरुता, दो कलंक
१४५. अध्यात्म की पृष्ठभूमि सत्श्रद्धा
१४६. रुग्णता का मूल कारण मनोविकार
१४७. भावी पीढ़ी के निर्माण में अभिभावकों का उत्तरदायित्व
१४८. मानवी मस्तिष्क विश्व-वसुधा का प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष
१४९. अध्यात्म ऊर्जा की प्रकटीकरण की साधना
१५०. नारी समुदाय को अतिवाद से बचना होगा
१५१. शिक्षा को सार्थक बनाया जाए
१५२. जनमानस का परिष्कार पर्व आयोजनों से
१५३. संक्रांतिकाल और अंतर्ग्रही परिस्थितियाँ
१५४. साधुजन नेतृत्व हेतु आगे आएँ
१५५. मातृशक्ति की गौरव-गरिमा
१५६. बुद्धि पर धर्म का अंकुश रखा जाए
१५७. संयमी रहें, बहुत दिन जिएँ
१५८. अवरोधों के दो अनुदान—साहस और पराक्रम
१५९. परिवार की गरिमा मर्यादा पालन में
१६०. साधना की सफलता वातावरण की सुसंस्करिता पर निर्भर
१६१. अनीति के विरुद्ध असहयोग एवं विरोध के अस्त्रों से जूझें
१६२. गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता जीवन की सर्वोपरि संपदा
१६३. आनंद की गंगोत्तरी अपने ही अंतराल में
१६४. बच्चों को नियमितता का शिक्षण दें
१६५. सर्वतोमुखी प्रतिभा के लिए गो-संवर्द्धन को प्रमुखता मिले
१६६. जीवन-निर्माण के १४ स्वर्णिम सूत्र
१६७. अपनी गरिमा और क्षमता को भूलें नहीं
१६८. नारी को कामिनी और रमणी न बनाया जाए
१६९. श्रेष्ठतम सेवा पतन निवारण
१७०. रुग्ण विवाह संस्था को स्वस्थ बनाया जाए
१७१. सत्साहित्य से बढ़कर हितैषी कोई नहीं
१७२. मानवीय स्वाभिमान को कलंकित न होने दें
१७३. अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष जारी रहे
१७४. आत्मनिर्माण सबसे बड़ा पुरुषार्थ
१७५. अपना स्तर और ममत्व विकसित करें
१७६. प्रगति को हमारे आंतरिक शत्रु ही रोकते हैं
१७७. संतुलित और शक्तिवर्द्धक आहार की विधि-व्यवस्था
१७८. महामानवों का सत्संग प्रशिक्षण स्वाध्याय के माध्यम से
१७९. अंत: की सदाशयता झुकने न पाए
१८०. उपासना क्यों और कैसे ?
१८१. सम्मान और सहयोग शिष्ट व्यवहार की प्रतिक्रियाएँ हैं
१८२. सुरदुर्लभ मानव तन पावा
१८३. सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार ही सच्ची ईश्वराराधना
१८४. धर्मधारणा मानवीय चेतना की अनिवार्य आवश्यकता
१८५. महामानवों की टकसाल भारतीय आर्षपरंपरा
१८६. लोक-रंजन से जनजागरण
१८७. भविष्यवक्ताओं का कथन नवयुग का आगमन
१८८. जीवन और मरण का अन्योन्याश्रित गतिचक्र
१८९. विचार-क्रांति और कलामंच
१९०. विज्ञान धर्म का विरोधी नहीं हो सकता
१९१. विश्वशांति किस प्रकार संभव होगी ?
१९२. परावलंबन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप
१९३. अंतरंग और बहिरंग के परिष्कार की साधना—अध्यात्म
१९४. युग-परिवर्तन की प्रक्रिया और पद्धति
१९५. जनसेवा में बाधाएँ एवं भटकाव
१९६. मरणोत्तर जीवन और उसकी सच्चाई
१९७. प्रेमभावना मानव-जीवन की सर्वोपरि शक्ति
१९८. सत्प्रवृत्तियों के अधिष्ठाता यज्ञदेवता
१९९. ओजस्, तेजस् और वर्चस् के जागरण की साधना
२००. तपश्चर्या का तत्त्वदर्शन
२०१. ईश्वर प्रेम अर्थात सद्भावनायुक्त संवेदना
२०२. खाएँ तो सही, पर विधि से
२०३. बच्चों के विकास के लिए आरंभ से ध्यान दिया जाए
२०४. उपासना की महत्ता और उसका स्वरूप
२०५. ऋद्धि-सिद्धि के उद्घाटन
२०६. इन छोटी-छोटी बातों को महत्त्वहीन न समझें
२०७. विकृतियाँ हटाने से नहीं, मिटाने से मिटती हैं
२०८. संकल्प ही सफलता में परिणत होते हैं
२०९. सफलता की कामना नहीं, साधना करें
२१०. प्रजातंत्र का मेरुदंड—समर्थ धर्मतंत्र
२११. आपके बच्चे शिष्ट एवं सदाचारी कैसे बनें ?
२१२. नर-नारी के मध्यवर्ती सात्त्विक सहयोग

२१३. अंतरंग के इष्टदेव की उपासना ही सार्थक एवं सच्ची साधना
२१४. अखंड आनंद का स्रोत अपने ही अंदर
२१५. जीवन का परमलक्ष्य सत्यम् शिवम् सुंदरम्
२१६. पुरस्कार चाहते हैं तो पात्रता विकसित करें
२१७. समस्याओं का उद्गम समाधान अंतःक्षेत्र में
२१८. साधु और ब्राह्मण परंपरा पुनर्जीवित हो
२१९. मानव की गौरव-गरिमा का आधार—ज्ञान-संपदा
२२०. ईश्वरीय अनुदान और उसका सदुपयोग
२२१. नारी स्वावलंबन की अनिवार्य आवश्यकता
२२२. साधना की सफलता जप और ज्ञान की समन्वित प्रक्रिया द्वारा
२२३. नर से नारायण बनने का प्रगति-पथ
२२४. वाक्शक्ति एक अमूल्य संपदा
२२५. धर्मदर्शन के चार मूलभूत सिद्धांत
२२६. आदर्श को लोक-व्यवहार में उतारें, यही सच्ची लोकसेवा है
२२७. भाव के भूखे हैं भगवान
२२८. सुखद संसार की संरचना विवेक-दृष्टि पर निर्भर
२२९. उपासनाएँ सफल क्यों नहीं होतीं ?
२३०. उज्ज्वल भविष्य की सुखद संभावनाएँ
२३१. श्रेष्ठता अपनाएँ, शालीनता से जिएँ
२३२. उत्कृष्ट मानस में ही ईश्वर का दर्शन
२३३. हरीतिमा संवर्द्धन एक परम पुनीत पुण्य
२३४. ऊर्जा की समस्या यों सुलझेगी
२३५. देवाधिदेव आत्मदेव की साधना
२३६. सफलता आसमान से नहीं टपकती,कमाई जाती है
२३७. एकाकी तो जिया भी नहीं जा सकता
२३८. धर्म अफीम की गोली नहीं है
२३९. धर्म का मर्म है—नीतिमत्ता
२४०. धर्म का उद्देश्य व्यक्ति का परिष्कार
२४१. बुद्धिवाद का, नीतिनिष्ठा का समन्वय
२४२. धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझा जाए
२४३. पुनर्जन्म एक सत्य
२४४. हमें नर-पिशाच नहीं, देवमानव बनना है
२४५. यह प्रगति नहीं, विनाश का मार्ग है
२४६. स्रष्टा की अद्भुत संरचना—मानव मस्तिष्क
२४७. स्नेह-सद्भाव के वश में है संसार
२४८. सुख और शांति की गंगोत्तरी अपने ही अंदर
२४९. विकसित व्यक्तित्व का मेरुदंड—भाव संवेदनाएँ
२५०. सत्य का साक्षात्कार आत्मावलंबन से ही संभव
२५१. उपयोगितावाद नहीं, सहकारितावाद
२५२. उत्कृष्टतावादी दर्शन ही भोगवाद का अंत करेगा
२५३. ईश्वर ज्वाला है और आत्मा चिनगारी
२५४. मानवेतर प्राणियों का स्नेहयुक्त जीवन एक प्रेरणा, एक शिक्षा
२५५. चेतना को प्रयोगशाला में नहीं, मानवीय अंतराल में खोजा जाए
२५६. सहयोग एवं सहकार ही प्रगति का निर्धारण करते हैं
२५७. एक सत्य के दो अन्वेषक : विज्ञान और धर्म
२५८. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक बनें
२५९. मानवीय उत्कर्ष संस्कृति के विकास पर निर्भर
२६०. जनसंख्या विस्फोट की विनाशलीला के पूर्व ही चेतें
२६१. प्रायश्चित एक समग्र मनश्चिकित्सा
२६२. स्वर्ग और नरक की अनुभूति कर्मफल के रूप में
२६३. प्रारब्ध अकारण नहीं सुनियोजित
२६४. प्रायश्चित विधान से अंतःकरण का परिमार्जन
२६५. भाग्यवाद नहीं पुरुषार्थवाद को मान्यता मिले
२६६. सहअस्तित्व का नैसर्गिक नियम
२६७. भावनाओं की शिक्षा इन मूक प्राणियों से लें
२६८. असीम संभावनाओं का स्रोत—मस्तिष्क
२६९. विलक्षण और अत्यंत सामर्थ्यवान मानवी मस्तिष्क
२७०. अध्यात्मवादी मनःशास्त्री की उपयोगिता समझी जाए
२७१. शाश्वत सौंदर्य का निवास अपने ही अंतराल में
२७२. कुसंस्कारों की प्रतिक्रिया—कष्ट, तनाव एवं विक्षोभ
२७३. मन की निर्मलता और शारीरिक स्वास्थ्य का अटूट संबंध
२७४. चिंतारूपी चिता में झुलसकर अपनी क्षमताएँ नष्ट न करें
२७५. काम, क्रीड़ा न बनने पाए
२७६. दवाएँ खाते जाएँ, रोग बढ़ाते जाएँ यह कहाँ तक उचित है ?
२७७. मानसिक शांति एवं संतोष का मूल स्रोत अपने ही अंतराल में
२७८. सामर्थ्य एवं शक्ति का राजमार्ग—ब्रह्मचर्य

२७९. कामशक्ति के दुरुपयोग की विभीषिकाओं का ध्यान रहे
२८०. नीरोग बने रहने के शाश्वत सिद्धांत
२८१. विक्षोभों और उद्वेगों से बचें
२८२. रुग्ण रहें या स्वस्थ, यह अपने मन पर निर्भर है
२८३. शारीरिक परिशोधन हेतु उपवास की अनिवार्यता
२८४. जटिल खाद्य समस्या के कुछ सरल समाधान
२८५. स्नेह का अभाव ही मनोरोगों को जन्म देता है
२८६. परिष्कृत आस्थाएँ ही अक्षय स्वास्थ्य का उद्गम केंद्र
२८७. समय का संयम एक महत्त्वपूर्ण साधना
२८८. सादगी और नियमितता दीर्घजीवन के दो आधार
२८९. यज्ञोपचार की स्वास्थ्य-संरक्षण प्रक्रिया
२९०. आस्था-संकट रूपी दुर्भिक्ष अब मिटकर ही रहेगा
२९१. रोगों को आप स्वयं आमंत्रित करते हैं
२९२. गायत्री महाशक्ति द्वारा युग-परिवर्तन का आश्वासन
२९३. अग्निहोत्र की गरिमा और महत्ता
२९४. युग-परिवर्तन का वातावरण बनाने विभूतिवान आगे आएँ
२९५. युग-साधना के व्यक्तित्व का उत्कर्ष
२९६. योग और तप का तत्त्वज्ञान
२९७. गायत्री के पाँच मुख और पाँच दिव्य कोश
२९८. उच्चस्तरीय साधना के कुछ जानने योग्य अनुशासन
२९९. चेतना का उत्कर्ष ही प्रगति का सही रूप
३००. युगचेतना के रूप में गायत्रीशक्ति का अरुणोदय
३०१. पंचमुखी गायत्री के पाँच दिव्य वरदान
३०२. देवत्व का उदय युग-साधना द्वारा
३०३. सूक्ष्म वातावरण का अनुकूलन सामूहिक उपासना द्वारा
३०४. आइए इन समस्याओं का हल ढूँढ़ें
३०५. हरीतिमा वृद्धि से स्वास्थ्य परमार्थ का समन्वय
३०६. बिना भक्ति-भावना के तत्त्वदर्शन रूखा, अधूरा है
३०७. शब्द ब्रह्म और यज्ञ विज्ञान
३०८. तृष्णाग्रस्त स्वार्थ संकीर्णता पहले सिरे की मूर्खता
३०९. दूरदर्शिता का अनुगमन हर दृष्टि में लाभदायक
३१०. मातृशक्ति की गौरव-गरिमा
३११. देव संस्कृति की गरिमा और उसके विस्तार की संभावनाएँ
३१२. लार्जर फेमिली—सहकारिता का एक अनुपम प्रयोग
३१३. नैतिक पुनरुत्थान के अभिनव प्रयास के लिए आवाहन
३१४. राष्ट्र का भावनात्मक नवनिर्माण ऐसे संभव होगा
३१५. आत्मविकास का राजमार्ग
३१६. स्वार्थ और परमार्थ की संतुलित रीति-नीति
३१७. सुख भोग में नहीं, त्याग में है
३१८. आध्यात्मिक प्रौढ़ता का चिह्न—परमार्थपरायणता
३१९. उपलब्धियों का एक ही आधार—मानवी सहकार
३२०. सुसंस्कारिता का दर्शन सुव्यवस्थित परिवार से
३२१. त्याग से प्राप्ति का सुनिश्चित एवं अकाट्य नियम
३२२. संसार की सर्वश्रेष्ठ सामर्थ्य—आत्मशक्ति
३२३. उपासना से अनिष्ट की आशंका न करें
३२४. पंचकोश अनावरण की फलश्रुति, प्रसुप्ति का जागरण
३२५. आस्तिकता, आध्यात्मिकता, धार्मिकता-त्रिपदा की तीन दिव्य प्रेरणाएँ
३२६. विश्वव्यापी समस्याओं का समाधान अध्यात्म द्वारा
३२७. निरक्षरता का कलंक धो ही डालें
३२८. अध्यात्म अर्थात उत्कृष्ट चिंतन, आदर्श कर्तृत्व
३२९. नारी उत्थान युग की महती आवश्यकता
३३०. नारी अपनी गरिमा समझें, नवनिर्माण के लिए आगे आएँ
३३१. नारीशक्ति की गौरवगाथा
३३२. सुसंतति निर्माण की समग्र प्रक्रिया
३३३. समाधान के ठोस प्रयास
३३४. नारी महान है, महान ही रहेगी
३३५. मानवता के न्यायालय में नारी की अपील
३३६. इस असह्य स्थिति का अंत होना चाहिए
३३७. वाक्शक्ति का दुरुपयोग न होने पाए
३३८. न घटते रहिए न भयभीत होइए
३३९. आध्यात्मिकता व्यवहार में उतरे
३४०. संतोष की परिस्थितियाँ मन:स्थिति में तलाशें
३४१. संकल्पशक्ति बढ़ाएँ, जो चाहें सो पाएँ
३४२. अपना आपा कितना महान कितना समर्थ
३४३. आत्मविश्वासी बनें, सफलता पाएँ
३४४. निराशा से बचें, आशावादी बनकर जिएँ
३४५. विनाश और सृजन का गतिचक्र
३४६. ध्वंस के बिना सृजन कैसे

३४७. जो सत्य है, वही शिव है, सुंदर है
३४८. गायत्री का तत्त्वज्ञान एवं प्रेरणाएँ
३४९. स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवन की कुंजी—आहारसंयम
३५०. इन भ्रम-जंजालों से मुक्त हों
३५१. युगप्रवर्तक गीत
३५२. युगगायन
३५३. प्रेरणाप्रद प्रज्ञागीत
३५४. पारस्परिक सहयोग प्रगति के लिए आवश्यक
३५५. आधुनिकता के विकृति मापदंडों को बदला जाए
३५६. भावनाओं की संपदा अन्य प्राणियों के पास भी
३५७. कर्मफल व्यवस्था के प्रति अनास्था ही नास्तिकता
३५८. सन् १९७८ का संकल्प अभियान
३५९. संकल्प अभियान (सिद्धांत पक्ष)
३६०. संकल्प अभियान (व्यवहार पक्ष)
३६१. ज्ञानघट और नवयुग का जीवनदर्शन
३६२. धरती पर स्वर्ग
३६३. चमत्कारों का जन्मदाता सुसंस्कृत व्यक्तित्व

१९८२

१. प्रज्ञापुराण, प्रथम खंड
२. साधना से सिद्धि
३. आंतरिक कायाकल्प का सुनिश्चित विधान
४. तीर्थसेवन से आत्मपरिष्कार
५. तीर्थ क्या थे ? क्या बन गए ? क्या बनने चाहिए ?
६. आसनों द्वारा काय-चिकित्सा
७. प्राणायाम से आधि-व्याधि निवारण
८. जड़ी-बूटियों द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण
९. सर्वोपरि गायत्री-साधना
१०. प्रज्ञा अभियान का दर्शन, स्वरूप और कार्यक्रम
११. सृजन शिल्पियों की योजनाबद्ध कार्यपद्धति
१२. भाषण और संभाषण की दिव्य क्षमता
१३. युगसृजन के संदर्भ में प्रगतिशील लेखनकला
१४. गायत्री यज्ञ और षोडश संस्कार, प्रथम भाग
१५. गायत्री यज्ञ और षोडश संस्कार, द्वितीय भाग
१६. प्रज्ञागीत, प्रथम भाग
१७. प्रज्ञागीत, द्वितीय भाग
१८. प्रज्ञाप्रवचन क्र० १, २, ३, ४ प्रत्येक पुस्तक में
१९. आसन-प्राणायाम से आधि-व्याधि निवारण
२०. जड़ी-बूटी चिकित्सा : एक संदर्शिका
२१. संधिवेला की विशिष्ट साधना, ध्यान-धारणा

१९८३

महामानवों के प्रेरक जीवनवृत्त

१. विश्वमानवता के संदेशवाहक
२. धर्म-संस्कृति के अग्रदूत
३. महान क्रांतिकारी महिलाएँ
४. जनजाग्रति के प्रणेता—युगमनीषी
५. स्वतंत्र भारत के आधारस्तंभ
६. अपनी राह स्वयं बनाने वाले असामान्य व्यक्तित्व
७. राष्ट्रदेव के सच्चे आराधक
८. सेवाधर्म के सच्चे उपासक
९. प्रतिभा और पराक्रम की साकार प्रतिमाएँ
१०. विज्ञान उपवन के महकते पुष्प
११. ज्ञानक्रांति के जन्मदाता कलम के सिपाही
१२. मानवता को विश्वबंधुत्व का मंत्र देने वाले सृजनशिल्पी
१३. जीवट और संकल्पशक्ति के धनी एवं पराक्रमी व्यक्तित्व
१४. शौर्य और पराक्रम के कीर्तिस्तंभ
१५. अध्यवसाय से अपना भाग्य बदलने वाले पुरुषार्थ संपन्न व्यक्तित्व
१६. सेवाधर्म की सिद्ध साधिकाएँ
१७. युग-प्रवाह को मोड़ देने वाले निर्भीक विचारक
१८. अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर
१९. जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएँ
२०. विश्वबंधुत्व संत वसुधा जिन्हें पाकर धन्य हुई
२१. प्रतिभा के धनी विज्ञान-जगत के महारथी

आत्मचिंतन विषयक पुस्तकें

१. सफल जीवन का केंद्रबिंदु उत्कृष्ट चिंतन
२. विकृत चिंतन रोग-शोक का मूलभूत कारण
३. वैभव नहीं, महानता का वरण करें
४. देव संस्कृति की गौरव-गरिमा अक्षुण्ण रहे
५. अज्ञान ही धर्मक्षेत्र की विकृतियों का कारण
६. अवांछनीय प्रचलनों को उलटने की आवश्यकता
७. विचार-क्रांति की आवश्यकता और उसका स्वरूप

८. विपत्तियाँ दुष्प्रवृत्तियों की सहेलियाँ
९. सुसंस्कृत बनें, समुन्नत बनें
१०. स्वास्थ्य-रक्षा प्रकृति के अनुसरण से ही संभव
११. मानव जीवन का उद्देश्य,स्वरूप और सदुपयोग
१२. प्रगति की, प्रसन्नता की जड़ें अपने ही भीतर
१३. सुनिश्चित संकल्प ही महान उपलब्धि के उत्पादक
१४. जीवन देवता की आराधना करें, व्यक्तित्वसंपन्न बनें
१५. समग्र प्रगति सहकारिता पर निर्भर
१६. पराक्रम और पुरुषार्थ से ओत-प्रोत यह मानवी सत्ता
१७. विवाह यज्ञ है, उसमें दुष्टता और भ्रष्टता न जोड़ें
१८. राष्ट्रीय प्रगति के कुछ अनिवार्य मापदंड
१९. चिरयौवन का रहस्योद्घाटन
२०. समृद्धि और शांति का एक आधार विभूतियों का सुनियोजन
२१. मन के हारे हार मन के जीते जीत
२२. मूढ़मान्यताओं की भूल-भुलैया में भटकें नहीं
२३. सभ्यता, सज्जनता और सुसंस्कारिता का अभिवर्द्धन
२४. बड़े आदमी नहीं, महामानव बनें
२५. न हि ज्ञान सदृश पवित्रमिह विद्यते
२६. सद्विचार ही मानव प्रगति के प्रधान कारण
२७. पुरुषार्थ ही मनुष्य की सर्वोपरि संपदा
२८. नवसृजन का एक समर्थ एवं सशक्त प्रयास
२९. स्वाध्याय मंडलों की स्थापना—कल्पवृक्ष का आरोपण
३०. समाज-निर्माण के कुछ शाश्वत सिद्धांत
३१. तीर्थ सेवन की पुण्य परंपरा का पुनर्जीवन

गुरुदेव का अभिनव लेखन-फोल्डरों के रूप में

१. जीवन को सार्थक बनाया या निरर्थक गँवाया जाए
२. खाने तक में नासमझी तक की भरमार
३. व्यवहार में औचित्य का समावेश
४. आत्मरक्षा मनोरोगों से भी करनी चाहिए
५. मन:संस्थान को विकृत न बनने दें
६. सूर्य और पवन के सान्निध्य से आरोग्य रक्षा
७. अचिंत्य चिंतन से मनोबल न गँवाएँ
८. क्षमताओं का सदुपयोग, प्रगति का राजमार्ग
९. आहार पौष्टिक ही नहीं, सात्त्विक भी हो
१०. सादा जीवन उच्च विचार
११. काया को रुग्ण और दुर्गतिग्रस्त न बनाएँ
१२. जिह्वा पर नियंत्रण हो तो स्वास्थ्य सुधरे
१३. हँसती-हँसाती जिंदगी क्यों न जिएँ
१४. कला प्रोत्साहन की उपयोगिता-आवश्यकता
१५. ज्ञान-संपदा कमाने में उपेक्षा न बरतें
१६. उपलब्धियों का सही समय पर सही उपयोग
१७. प्रस्तुत अर्थ-संकट का सरल समाधान
१८. रोग से लड़ें पर रोगी को तो बचाएँ
१९. बृहत्तर परिवारों की संरचना एक सामयिक आवश्यकता
२०. आजीविका के स्रोत देहातों में खोजें
२१. निर्माण से पूर्व सुधार की सोचें
२२. आत्मनिर्माण जीवन का प्रथम सोपान
२३. आस्तिकता और सज्जनता की रीति-नीति
२४. अध्यात्म संसार का सबसे लाभदायक व्यापार
२५. हमारे अंत:करण का देवासुर संग्राम
२६. मन को स्वच्छ और संतुलित रखें
२७. प्रवाह में न बहें, उत्कृष्टता से जुड़ें
२८. आत्मिक प्रगति की दिशाधारा
२९. उत्कृष्ट चिंतन ही समग्र प्रगति का एकमात्र आधार
३०. अध्यात्म अपने परिष्कृत रूप में हमारे जीवन में उतरे
३१. हरीतिमा से स्नेह बढ़ाएँ, फूल उगाएँ
३२. परिवार की प्रगति, भावना और व्यवहार के समन्वय पर निर्भर
३३. अंतराल के परिशोधन की प्रायश्चित प्रक्रिया
३४. नवनिर्माण हेतु विभूतियों का आह्वान
३५. तीर्थयात्रा प्रयोजन और प्रतिफल
३६. परिवार-संस्था समर्थ और सशक्त बनें
३७. शिशु निर्माण में अभिभावकों की भूमिका
३८. संक्रांति वेला और युग-परिवर्तन की संभावनाएँ
३९. युगदेवता का अनुरोध-आमंत्रण
४०. महानता से जुड़ें, समय को पहचानें
४१. आहार-क्रांति से कुपोषण निवारण
४२. तीर्थ-प्रक्रिया प्राणवान बने
४३. विनाश की घड़ी आ पहुँची, अब तो बदलें
४४. मरने से डरना क्या!
४५. जीवन का उत्तरार्द्ध परमार्थ में नियोजित हो
४६. पशु स्तर त्यागें, मानवीय गरिमा में प्रवेश करें
४७. आत्मबोध से देवत्व की प्राप्ति
४८. आत्मिक प्रगति के तीन सोपान

४९. विवाहोन्माद के असुर से जूझ पड़ें
५०. लोकरंजन से लोक-मंगल की लक्ष्यसिद्धि
५१. दुष्प्रवृत्ति से जूझें, सत्प्रवृत्ति उभारें
५२. परिवार संस्था नवसृजन की प्रयोगशाला
५३. विभूतियाँ अर्जित करें, संपदा नहीं
५४. जीवन-व्यापार में ईश्वर की साझेदारी
५५. स्वयं को बदलें, जग को सुधारें
५६. साधना से सिद्धि तक सिद्धांत और स्वरूप
५७. अध्यात्म का लक्ष्य, आधार और प्रयोग
५८. एकता, समता और सुव्यवस्था की नीति अपनाएँ
५९. जनशक्ति को नवसृजन में जुटाया जाए
६०. महत्त्वाकांक्षाएँ विकृत न होने पाएँ
६१. आस्तिकता व्यवहार में उतरेगी, तो ही संकट मिटेंगे
६२. नारी उत्थान हेतु सुनियोजित २४ सूत्रीय कार्यक्रम
६३. मानवी सभ्यता की जननी परिवार संस्था
६४. जीवन-संपदा का स्वरूप और सदुपयोग
६५. संघशक्ति जागे, समाज को सुसंस्कृत बनाएँ
६६. व्यक्तित्वसंपन्न युगशिल्पी ही नवनिर्माण करेंगे
६७. युग-परिवर्तन का आधार भावनात्मक नवनिर्माण
६८. अध्यात्म, मानवता का प्राण-संस्कृति का मेरुदंड
६९. आस्तिकता का तत्त्वज्ञान एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन
७०. उपेक्षा न होती तो परिवार का स्तर यों न गिरता
७१. उदारशीलता विवेकसम्मत हो
७२. उत्कृष्टता की स्थापना हेतु ऋषिपरंपरा का पुनर्जीवन
७३. स्वर्ग और नरक हमारी करनी के ही फल
७४. कर्मफल की स्वयंसंचालित प्रक्रिया
७५. अपूर्णता से पूर्णता की ओर
७६. प्राणयोग द्वारा ऊर्जा का मंथन संवर्द्धन
७७. एकाग्रता की शक्ति और उसका सुनियोजन
७८. आत्मिकी चेतना को परिष्कृत बनाने वाली फलदायी विद्या
७९. आत्मचेतना की जाग्रति का ज्ञान-विज्ञान
८०. आत्मिकी का पुनर्जीवन आज का युगधर्म
८१. अध्यात्म ही अनगढ़ विज्ञान को सुघढ़ बना सकता है
८२. अध्यात्म विज्ञानसम्मत बने और विज्ञान अध्यात्मपरक
८३. सच्ची साधना क्या और कैसे ?
८४. अध्यात्म के अवलंबन से नर का नारायण में परिवर्तन
८५. आध्यात्मिक काम विज्ञान की जानकारी जन-जन तक पहुँचे
८६. मृगतृष्णा हमीं ने रखी है हमीं उससे उबरें
८७. अपने अंत:करण के देवता को जगाइए
८८. परिष्कृत कामतत्त्व हेय नहीं, अभिनंदनीय
८९. वैज्ञानिकों की दृष्टि में जीवात्मा की सत्ता
९०. मंत्रों में निहित शक्ति एवं उसकी जाग्रति
९१. शब्द एक प्रचंड ऊर्जाशक्ति का भांडागार
९२. जप-प्रक्रिया का वैज्ञानिक आधार
९३. आज्ञाचक्र जगाएँ, दिव्यदृष्टि पाएँ
९४. ईश्वर की सत्ता और उसकी अनुभूति
९५. अंतराल की वैभवपूर्ण सत्ता का जागरण-उन्नयन
९६. योग : प्रसुप्त की जाग्रति का उच्चस्तरीय विज्ञान
९७. आत्मज्ञान का तत्त्वदर्शन
९८. भावचेतना को प्रभावित करे, ऐसी विद्या की खोज में
९९. स्वप्न अंत: के ज्वार-भाटों की बहिरंग में झाँकी कराते हैं
१००. एक वर्ष की प्रव्रज्या का विशेष आमंत्रण
१०१. तीर्थ-परंपरा का अभिवन पुनर्जीवन
१०२. प्रज्ञा अभियान का अदृश्य सूत्र-संचालन
१०३. शांतिकुंज के कल्प साधना सत्र
१०४. वातावरण का परिशोधन प्रज्ञा पुरश्चरण से
१०५. वायुप्रदूषण का सरल उपचार तुलसी आरोपण
१०६. सभी प्रज्ञा संस्थान वार्षिक प्रज्ञा आयोजन की तैयारी करें
१०७. छोटे स्वाध्याय मंडलों की बड़ी तथा महती भूमिका
१०८. स्वाध्याय मंडल, प्रज्ञा संस्थान और प्रज्ञाकेंद्र
१०९. चमत्कारी किंतु सर्वथा हानिरहित योग-साधनाएँ
११०. तप-साधना से प्रसुप्त क्षमताओं का उभार
१११. प्रायश्चित से अंतराल का परिशोधन, परिष्कार
११२. प्रज्ञायोग सर्वोत्तम किंतु सर्वसुलभ साधना
११३. धर्मतंत्र की अनुपम शक्ति-सामर्थ्य
११४. अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की शोध-प्रक्रिया
११५. प्रगति का प्रथम सोपान स्वास्थ्य-संवर्द्धन
११६. गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले पाठशाला, मल्लशाला चल पड़ें
११७. प्रज्ञा अभियान का स्वास्थ्य-संरक्षण कार्यक्रम

११८. हम बदलेंगे-युग बदलेगा उद्घोष नहीं, व्यवहार में उतरे
११९. महाप्रज्ञा का युगशक्ति के रूप में अरुणोदय
१२०. दिव्य वनस्पतियों का अमृतोपम लाभ उठाएँ
१२१. दीवारों को बोलती बनाएँ, आदर्श वाक्य आंदोलन चलाएँ
१२२. संभाषण एवं संगीत जनजागरण के प्रमुख माध्यम
१२३. प्रज्ञा-अवतार, प्रज्ञा-युग एवं प्रज्ञा-परिजन
१२४. शांतिकुंज और उसका प्रज्ञा-अभियान
१२५. सादगी भरे विवाहों की सत्परंपरा सब ओर चल पड़े
१२६. जीवन-साधना के त्रिविध पंचशील
१२७. नारी का सहज, सौम्य स्वरूप पुनः प्रतिष्ठित हो
१२८. नारी संबंधी विवाह को अब तो विराम दें
१२९. महाकाल का स्वरूप और उसकी भावी रीति-नीति
१३०. प्रजातंत्र की सफलता का कुछ निश्चित मानदंड
१३१. नेता बहुत हैं, सृजेता चाहिए
१३२. कामबीज की सृजनात्मक शक्ति
१३३. आत्मशक्ति का परिष्कार ही नवयुग का मूल आधार
१३४. उपासना को समग्र रूप में अपनाएँ, समुचित लाभ उठाएँ
१३५. तेजोवलय एक बहुमूल्य आध्यात्मिक संपदा
१३६. अतींद्रिय सामर्थ्य एवं परब्रह्म की विधि-व्यवस्था
१३७. सृष्टि कुशल कलाकार की अद्भुत कलाकृति
१३८. शब्द विद्या चमत्कारों से भरी एक अद्भुत शक्ति
१३९. कामबीज एवं ज्ञानबीज की शक्ति-सामर्थ्य का रहस्योद्घाटन
१४०. आत्मिक प्रगति की कुंजी-अचेतन की परिष्कृति
१४१. अध्यात्मवादी मनःशास्त्र की उपयोगिता समझी जाए
१४२. काय विद्युत के ऊर्जा स्रोत को नष्ट न होने दें
१४३. अंतःकरण का परिष्कार प्रखर उपासना से ही संभव
१४४. उथल-पुथल की वेला एवं उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ
१४५. नशा एक घातक दुर्व्यसन
१४६. सृजन के साथ ध्वंस की अनिवार्यता
१४७. जनमानस का परिष्कार धर्मतंत्र के मंच से
१४८. व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने वाली संकल्पशक्ति
१४९. नवसृजन के सृजनात्मक संकल्पों की आवश्यकता
१५०. क्या तृतीय विश्वयुद्ध होकर ही रहेगा ?
१५१. नवसृजन के साथ जुड़ी ध्वंस की अनिवार्यता
१५२. सृजन में लगें तो संकट टले
१५३. हम बदलेंगे-युग बदलेगा सूत्र का शुभारंभ
१५४. भावी पीढ़ी समुन्नत स्तर की कैसे बने ?
१५५. ईश्वर-विश्वास के फलितार्थ
१५६. योग-साधनाओं का स्वरूप और प्रयोजन
१५७. चमत्कारी सिद्धियों के भ्रम-जंजाल से निकलें
१५८. ब्राह्मीचेतना परमार्थ सत्ता का विलक्षण एवं अकाट्य प्रमाण
१५९. विस्मृति से उबरें, अपना आपा सुदृढ़ बनाएँ
१६०. अणु में विभु, लघु में महान
१६१. मानव का जीवन दर्शन, अविज्ञात का द्वार-मनोविज्ञान
१६२. धर्मदर्शन के क्षेत्र में भी अब क्रांति होगी
१६३. कुकल्पनाओं का विचित्र संसार
१६४. परिष्कृत दृष्टिकोण ही स्वर्ग है
१६५. अहंमन्यता मिटे, देवत्व की सदाशयता विकसे
१६६. वाक्शक्ति एवं मंत्रसिद्धि
१६७. भवबंधन और जीवनमुक्ति
१६८. स्वतंत्रता का सही अर्थ समझें, उच्छृंखलता को पनपने न दें
१६९. धर्म के नाम पर पनपा संप्रदायवाद मिटे
१७०. धर्म और संप्रदाय का अंतर समझें
१७१. सर्वांगीण प्रगति शिक्षा एवं विद्या के समन्वय से ही संभव
१७२. शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक
१७३. नागरिकों के स्तर पर राष्ट्र की प्रगति निर्भर
१७४. बालकों से माता-पिता का व्यवहार
१७५. बालकों के सहायक बनिए, शासक नहीं
१७६. किशोरावस्था में दुलार और सुधार की संतुलित नीति अपनाएँ
१७७. दांपत्य जीवन का प्रयोजन एवं सुनियोजन
१७८. परिवार संस्था की सुव्यवस्थित आचार संहिता
१७९. परिवार निर्माण हेतु पंचशील
१८०. घरों में सुसंस्कारिता कैसे पनपे, फले-फूले
१८१. समाज की समग्र प्रगति का आधार नारी उत्थान
१८२. ऐसी पराधीनता किस काम की!
१८३. सृजन की देवी को कलंकित न करें

१८४. नारी का पिछड़ापन एक त्रासदी भरी विडंबना
१८५. नवजागरण नारी जाग्रति के बिना संभव नहीं
१८६. इस हृदयद्रावक स्थिति को कब तक सहन करेंगे ?
१८७. कच्चा खाएँ-स्वास्थ्य बनाएँ
१८८. उज्ज्वल भविष्य की संरचना में संलग्न महाकाल
१८९. असुरता का मान-मर्दन संघशक्ति के बल पर
१९०. आत्मविस्मृति की यह स्थिति कब तक रहेगी ?
१९१. सर्वांगीण प्रगति की दूरदर्शी नीति
१९२. जीवन-संपदा का स्वरूप और सदुपयोग
१९३. उज्ज्वल भविष्य के लिए वर्तमान का सदुपयोग
१९४. पौष्टिक आहार सर्वसुलभ और सस्ता भी
१९५. स्वाद की गुलामी तो स्वीकार न करें
१९६. अपना ही नहीं, समाज का भी हित सोचें
१९७. समृद्धि के लिए दूरदर्शी नीति अपनायी जाए
१९८. व्यक्ति की प्रगति समाज की उन्नति में
१९९. अपनी भाव-संपदा जगाएँ, श्रेय पाएँ
२०० असंतुलन को मिटाने वाली अवतार-प्रक्रिया का आविर्भाव सन्निकट
२०१. गंध शक्ति का प्रभाव-सामर्थ्य
२०२. सुरदुर्लभ काया का सार्थक एवं सुनियोजित उपयोग हो
२०३. कुंडलिनी का स्वरूप एवं प्रयोग
२०४. सूक्ष्मीकरण चिकित्सा का दर्शन एवं स्वरूप
२०५. मन को मनाइए, अपना सहयोगी बनाइए
२०६. यज्ञोपचार का ज्ञान-विज्ञान
२०७. कुंडलिनी-साधना से प्रज्ञा और प्रखरता का जागरण
२०८. आस्था की ज्योति बुझने न दें
२०९. महान संकल्पों की महान परिणति
२१०. आदर्श निष्ठा हमारे अतीत की गरिमा
२११. सांस्कृतिक गौरव की ऐतिहासिक झाँकी
२१२. सा प्रथमा संस्कृति : विश्ववारा
२१३. भारतीय तत्त्वज्ञान के वर्चस्व की गौरवगाथा
२१४. भारतीय संस्कृति-मानव संस्कृति
२१५. संस्कृति के अग्रदूत चेतें, उत्तरदायित्व निभाने आगे आएँ
२१६. धर्मचक्रप्रवर्तन की क्रांतिकारी प्रक्रिया
२१७. पर्व एवं त्योहार देव संस्कृति की अनमोल धरोहर
२१८. अपने सांस्कृतिक गौरव को भूलें नहीं
२१९. उत्कृष्ट आदर्शवादिता की पक्षधर भारतीय संस्कृति
२२०. सृजन साधकों के लिए ज्ञानघटों की स्थापना
२२१. जड़ी-बूटी विज्ञान का नए सिरे से अनुसंधान
२२२. हर प्रज्ञा संस्थान में बाल संस्कार कक्षाएँ चल पड़ें
२२३. भाषाओं एवं धर्मों का प्रशिक्षण विद्यालय
२२४. घरेलू शाकवाटिका—शोभा, स्वास्थ्य, सृजन एवं बचत
२२५. हिमालय की ऋषि-परंपरा का अभिनव संस्करण—शांतिकुंज
२२६. गायत्री तीर्थ के समग्र स्वास्थ्य-संवर्द्धन सत्र
२२७. युगसाहित्य का लेखन और प्रसार-प्रकाशन
२२८. दृढ़ सत्संग की प्राणवान तैयारी
२२९. प्रतिभाएँ समय की माँग पूरी करें
२३०. सद्ज्ञान संवर्द्धन का पुण्य परमार्थ
२३१. दहेज और धूमधाम की शादियाँ न होने दें
२३२. वृक्ष संपदा को घटने न दें
२३३. क्या खाएँ ? कैसे खाएँ ?
२३४. जो स्वीकारें, उसे विवेक की कसौटी पर कस लें
२३५. बड़े परिवार बनाने की युक्तिसंगत प्रक्रिया
२३६. अपने बच्चों को वह पढ़ाएँ, जो काम आए
२३७. बेरोजगारी हटाने और शांति से रहने के लिए स्वदेशी व्रत आवश्यक
२३८. मनोबल अनेकानेक सफलताओं की कुंजी
२३९. औचित्य के अनुरूप दृष्टिकोण अपनाएँ
२४०. शासनतंत्र से संबंधित कुछ उपयोगी सुझाव
२४१. समग्र समता ही सुख-शांति की आधारशिला
२४२. दुष्प्रवृत्तियाँ पतन और पराभव का कारण
२४३. इक्कीसवीं सदी मानवीय बुद्धि को चुनौती
२४४. समग्र परिवर्तन की वेला आ पहुँची
२४५. मन:स्थिति और परिस्थितियों का उत्कर्ष आवश्यक
२४६. इन अंधविश्वासों से पीछा छुड़ाएँ
२४७. इन दिनों का प्रजनन विपत्ति का आमंत्रण
२४८. ईमानदारी, सर्वतोमुखी प्रगति की सुनिश्चित नीति
२४९. व्यायाम आंदोलन को व्यापक बनाया जाए
२५०. पात्रता विकसित करें, ताकि उसी अनुपात में निहाल हो सकें
२५१. भौतिक प्रगति के सुनिश्चित आधार
२५२. आध्यात्मिक विज्ञान की भी प्रगति हो
२५३. आज की महती आवश्यकता लोक नेतृत्व
२५४. कृत्य किसी का, श्रेय किसी को

कल्पसाधना सत्रों में स्वाध्याय हेतु फोल्डर्स

१. प्रज्ञा सम्मेलन जो इन्हीं दिनों होने हैं
२. शांतिकुंज के कल्पसाधना सत्र
३. स्थूलशरीर को नीरोग बनाने की कला
४. सूक्ष्मशरीर से प्रतिभा-प्रखरता का विस्तार
५. कारणशरीर की दिव्य विभूतियों का जागरण उन्नयन
६. प्रायश्चित द्वारा अंतराल का परिशोधन-परिष्कार
७. धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण की प्रखर प्रक्रिया
८. जागरण के प्रमुख माध्यम—भाषण, संपादन एवं संगीत
९. जनसंपर्क, जनजागरण की पाँच सूत्री योजना
१०. स्वाध्याय-मंडलों का उद्देश्य, गठन और विस्तार
११. तीर्थसाधना देवत्व के अभिवर्द्धन की प्रक्रिया
१२. प्रज्ञायोग—सर्वसुलभ एवं सर्वोत्तम साधना
१३. तीर्थसेवन शृंखला के साथ कुछ नए निर्धारण
१४. शांतिकुंज और उसका प्रज्ञा-अभियान
१५. कल्पसाधक ऐसी मनोभूमि लेकर लौटें
१६. बोलती दीवारें आदर्श वाक्य लेखन
१७. गायत्री तीर्थ प्रज्ञा परिजनों का प्रेरणास्रोत
१८. तीर्थ-परंपरा का पुनर्जीवन
१९. गुरु-दीक्षा साधना क्षेत्र का प्रथम सोपान
२०. प्रज्ञावतार, प्रज्ञापुत्र और प्रज्ञापरिजन
२१. प्रज्ञा अभियान का योग-व्यायाम
२२. आद्यशक्ति गायत्री युगशक्ति भी
२३. वनस्पतियाँ उगाएँ—अमृतोपम लाभ उठाएँ
२४. शिखा विस्तार-स्वास्थ्य-संवर्द्धन
२५. हम बदलें तो युग बदले उद्घोष का शुभारंभ
२६. सादगी वाले विवाहों की परंपरा चलाएँ
२७. व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण के पंचशील
२८. युगांतरीय चेतना का बीज, जो गला और विशाल वृक्ष बना
२९. अंतर्ग्रही परिस्थितियों के प्रशिक्षण की वेधशाला
३०. अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की ब्रह्मवर्चस् की शोध-प्रक्रिया
३१. भाषण, संभाषण और संगीत से लोक-शिक्षण
३२. परमपूज्य गुरुदेव की सूक्ष्मीकृत जीवनचर्या
३३. प्रज्ञापुराण की प्रेरणाओं से जनजीवन अनुप्राणित हो
३४. धार्मिक कृत्यों के साथ देव-दक्षिणा आवश्यक
३५. ज्ञानरथ बिना इमारत के चल प्रज्ञा-संस्थान
३६. युगशिल्पियों की गरिमा ऊँची रहे
३७. प्रज्ञासंस्थान, प्रज्ञा-आयोजन भी संपन्न करें
३८. प्रतिभावान लोकसेवियों का उच्चस्तरीय शिक्षण, पाठ्यक्रम एवं नियमावली
३९. समग्र व्यक्तित्व की कल्पसाधना
४०. हर प्रज्ञापीठ में बाल संस्कारशालाएँ चल पड़ें
४१. हर वर्ष की प्रज्ञा-प्रव्रज्या का विशेष आमंत्रण
४२. जनजाग्रति का अभिनव अभियान
४३. घरों में सुसंस्कारिता कैसे पनपे, फले-फूले
४४. भाषायी विस्तार एक अतिमहत्त्वपूर्ण निर्धारण
४५. प्रस्तुत वसंत पर हर परिजन के लिए एक ही अनुरोध-निर्देश
४६. सृजन साधकों के लिए ज्ञानघटों की स्थापना
४७. शांतिकुंज : एक परिचय
४८. हमारी भावी प्रक्रिया, पद्धति एवं वरिष्ठ परिजनों की जिम्मेदारी
४९. गायत्री यज्ञों के कृत्यों की व्याख्या-विवेचना
५०. तीर्थ-परंपरा की एक झलक-झाँकी गायत्री तीर्थ में
५१. सुयोग्य प्रतिभाओं का उच्चस्तरीय शिक्षण हेतु आह्वान
५२. इस वर्ष के तीन अति महत्त्वपूर्ण निर्धारण
५३. भाषाओं एवं धर्मों का शिक्षण विद्यालय
५४. प्रज्ञासाहित्य पढ़ाएँ, सृजनशिल्पी ढूँढ़ निकालें
५५. सत्संग प्रयोजन के तीन उपकरण
५६. अध्यात्म विज्ञान की ब्रह्मवर्चस शोध प्रक्रिया
५७. परिवार में समाज निर्माण और आत्मनिर्माण सिखाएँ
५८. जड़ी-बूटी विज्ञान का नए सिरे से अनुसंधान
५९. व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण के पंचशील
६०. धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण की प्रखर प्रक्रिया
६१. तीर्थसेवन शृंखला के साथ कुछ नए निर्धारण
६२. प्रज्ञा अभियान एवं दैवी चेतना द्वारा उसका परोक्ष सूत्र-संचालन
६३. स्वास्थ्य-संवर्द्धन प्रगति की पहली सीढ़ी
६४. महिला जाग्रति अभियान—एक परिचय
६५. शांतिकुंज की प्रगतिशील प्रशिक्षण प्रक्रिया
६६. प्रज्ञागीत, भाग एक
६७. प्रज्ञागीत, भाग दो
६८. प्रज्ञागीत, भाग तीन

६९. प्रज्ञागीत, भाग चार
७०. प्रज्ञागीत, भाग पाँच

१९८४

१. शिष्ट बनें, सज्जन कहलाएँ
२. महाप्रज्ञा की साधना एवं वर्चस् की सिद्धि
३. समाज निर्माण के कुछ शाश्वत सिद्धांत
४. नया संसार बसाएँगे, नया इनसान बनाएँगे
५. शिक्षा और विद्या का सार्थक-समन्वित स्वरूप
६. हमारी युग निर्माण योजना, भाग २
७. विवाह पद्धति
८. मरणोत्तर श्राद्ध कर्म-विधान
९. युग निर्माण योजना का विवाह-विशेषांक
१०. दृश्य गणित-ब्रह्मवर्चस पंचागम
११. प्रज्ञावतार का स्वरूप और क्रियाकलाप
१२. युग-परिवर्तन क्यों और किसलिए ?
१३. प्रज्ञा-अभियान का स्वरूप और उसकी उपलब्धियाँ
१४. युगशिल्पियों की गलाई-ढलाई

१९८५

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का अमूल्य साहित्य

१. एक ही सत्य के दो अन्वेषक—धर्म और विज्ञान
२. ज्ञान और विज्ञान एकदूसरे के सहोदर
३. आत्मिकी की एक सर्वांगपूर्ण शाखा ज्योतिर्विज्ञान
४. अंतरिक्ष विज्ञान एवं परोक्ष का अनुसंधान
५. कामतत्त्व का ज्ञान-विज्ञान
६. यह सृष्टि न अनगढ़ है, न अनियंत्रित
७. स्रष्टा का अस्तित्व सृष्टि के कण-कण से प्रमाणित
८. नियामक सत्ता एवं उसकी विधि-व्यवस्था
९. प्रत्यक्ष से भी अति समर्थ परोक्ष
१०. विराट ब्रह्म की झरोखे से झाँकी
११. आस्तिकवाद—तथ्य एवं सत्य
१२. सुप्रजनन भावी पीढ़ी का नवसृजन
१३. आस्तिकता की दार्शनिक और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१४. नर से नारायण बनने का प्रगति-पथ
१५. मानवी काया कितनी विलक्षण कितनी अद्भुत
१६. अदृश्य जगत का पर्यवेक्षण सपनों की खिड़की से
१७. पराक्रम और पुरुषार्थ से भरी आत्मसत्ता
१८. अतींद्रिय सामर्थ्य—संयोग नहीं तथ्य
१९. भानुमती का जादुई पिटारा मानवी मस्तिष्क
२०. तिलस्मों से भरी सृष्टि एवं उसके अविज्ञात रहस्य
२१. पितर हमारे अदृश्य सहायक
२२. मरणोत्तर जीवन और उसकी सचाई
२३. विक्षुब्ध मन:स्थिति और प्रेतयोनि
२४. क्या सचमुच मनुष्य एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ?

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१. प्रज्ञा पुराण, प्रथम खंड
२. प्रज्ञा पुराण, द्वितीय खंड
३. प्रज्ञा पुराण, तृतीय खंड
४. प्रज्ञा पुराण, चतुर्थ खंड
५. सात्त्विक दिनचर्या और दीर्घायुष्य
६. प्रज्ञापरिजन एवं उनका युगधर्म

१९८६

प्रज्ञा विद्यालयों की प्रशिक्षण सामग्री

१. इस वर्ष का अति महत्त्वपूर्ण कदम
२. त्रैमासिक प्रज्ञा प्रशिक्षण योजना
३. सद्ज्ञान संवर्द्धन युगशिल्पियों का पुनीत कर्त्तव्य (अशिक्षा का निवारण एवं युगशिल्पियों का नवसृजन)
४. नारी-शिक्षण की उपेक्षा न हो
५. स्वस्थ रहने के कुछ मूलभूत सिद्धांत
६. सरल, संक्षिप्त गायत्री यज्ञ एवं उसका विधि-विधान
७. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी
८. तुच्छ से तुच्छ और महान से महान
९. आत्मिक प्रगति हेतु प्रज्ञायोग की साधना
१०. जनजागरण के अतिरिक्ति और कोई मार्ग नहीं
११. प्रज्ञागीत-युगशिल्पी १
१२. प्रज्ञागीत-युगशिल्पी २
१३. बाल संस्कारशालाएँ इस तरह चलें
१४. गायत्री-उपासना और उसके चमत्कारी परिणाम
१५. इस युग की अभूतपूर्व स्थापना—प्रज्ञा अभियान
१६. कैसा होगा आने वाला युग ?
१७. धर्मतंत्र की क्षमता निरर्थक न बहे

१८. सामूहिक आयोजनों की व्यवस्था
१९. पाँच क्रांतियाँ जो अविलंब हों
२०. आलोक वितरण की विशाल योजना
२१. समस्याएँ अनेक—हल एक
२२. नारी को मनुष्य समझा जाए
२३. जीवन एक अमूल्य संपदा
२४. विवाह और दांपत्य जीवन का निर्वाह
२५. परिवार में स्वर्गीय वातावरण कैसे बने ?
२६. इन भ्रम-जंजालों से निकलें
२७. सहकारिता अर्थात समृद्धि और प्रगति
२८. हमारे देहातों का कायाकल्प कैसे हो ?
२९. ऋण लादकर न मरें
३०. बुढ़ापे को कष्ट साध्य न बनाएँ
३१. वह जो आपको आज ही करना है
३२. यह अनावश्यक भार अब न बढ़ाएँ
३३. मसालावाटिका हेतु घरेलू उपचार
३४. लोकसेवा का क्षेत्र एवं मर्यादाएँ (लोकसेवियों की आचारसंहिता-युगशिल्पियों की आचारसंहिता)
३५. व्यक्तित्व के सर्वांगपूर्ण परिष्कार का प्रशिक्षण
३६. फर्स्ट एड—एक गाइड बुक
३७. नौदिवसीय विशिष्ट साधना सत्र
३८. परिचर्या और उसके मूलभूत तत्त्व
३९. वरिष्ठ प्रज्ञापुत्रों से आशा एवं अपेक्षा

अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

१. हमारी वसीयत और विरासत
२. अध्यात्म क्या था ? क्या हो गया ? क्या होना चाहिए ?
३. सद्भाव और सहकार पर ही परिवार संस्था निर्भर
४. जल्दी मरने की उतावली न करें
५. नहि ज्ञानेन सदृश: पवित्रमिह विद्यते
६. राष्ट्रीय प्रगति के कुछ अनिवार्य मापदंड
७. देव संस्कृति की गौरव-गरिमा अक्षुण्ण रहे
८. संयुक्त परिवार से संयुक्त दायित्व
९. सफल दांपत्य जीवन के मौलिक सिद्धांत
१०. विवाह यज्ञ है, उसे उद्धत-उत्पात जैसा न बनाएँ
११. जड़ी-बूटी चिकित्सा एवं संदर्शिका
१२. शिक्षण-प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता

१९८७

१. गृहस्थ जीवन एक तपोवन
२. सर्वांग सुंदर जीवन की रीति-नीति
३. घर-परिवार भी एक शरीर है
४. प्रगति और समृद्धि का राजमार्ग
५. ज्ञान की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
६. सतयुग की वापसी
७. आत्मिक प्रगति का मूलभूत आधार
८. सर्वांगपूर्ण शिक्षा का स्वरूप
९. प्रसुप्त चेतना का अभिनव जागरण
१०. समझदारों की नासमझी
११. अध्यात्म चेतना का ध्रुवकेंद्र—देवात्मा हिमालय
१२. धर्म के दस लक्षण और पंचशील
१३. पतंजलि का तत्त्वदर्शन
१४. सेवा-साधना में स्वार्थ और परमार्थ का समन्वय
१५. सार्थक और समग्र शिक्षा का स्वरूप
१६. बाल निर्माण की कहानियाँ, भाग १६
१७. परिवार-निर्माण की विधि-व्यवस्था
१८. ऋषिचिंतन
१९. नारी-उत्थान की समस्या और समाधान
२०. आत्मिक प्रगति के लिए अवलंबन की आवश्यकता
२१. दीपयज्ञ क्यों ? कैसे ?
२२. यज्ञ का महत्त्व एवं माहात्म्य
२३. ब्रह्मवर्चस् : एक संक्षिप्त परिचय
२४. नारी जागरण अभियान
२५. ज्ञानयोग की साधना
२६. शिक्षण-प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता

१९८८

१. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान—प्रयोजन और प्रयास
२. वे कार्य जो अभी ही करने हैं
३. युगगायन (संकीर्तन-सहगान)
४. युगसंगीत
५. प्रज्ञा अभियान का योग—व्यायाम
६. युगसंधि पुरश्चरण—प्रयोजन और प्रयास
७. सतयुग की वापसी
८. आद्यशक्ति का पुनर्जागरण

९. विचार-क्रांति के दीपयज्ञ
१०. नवनिर्माण की पृष्ठभूमि
११. गरीबी भगाएँ—गरिमा बढ़ाएँ
१२. युग की माँग—प्रतिभा परिष्कार
१३. जीवन देवता की साधना-आराधना
१४. सदाचार और मर्यादापालन
१५. विकृत चिंतन ही रोग-शोक का मूलकारण
१६. युगसंधि महापुरश्चरण

१९८९

१. प्रखर प्रतिभा की जननी—इच्छाशक्ति
२. लोक-मानस का परिष्कृत मार्गदर्शन
३. काया में समाया प्राणाग्नि का जखीरा
४. प्रतिभा, पुरुषार्थ की चेरी
५. इक्कीसवीं सदी की माँग—युगनेतृत्व
६. परोक्ष सत्ता एवं उसकी विधि-व्यवस्था
७. मानव जीवन का बहुमूल्य उपहार
८. काय ऊर्जा एवं उसकी चमत्कारी सामर्थ्य
९. दैवी शक्ति के अनुदान और वरदान
१०. परिष्कृत व्यक्तित्व एक सिद्धि-एक उपलब्धि
११. विचारों की सृजनात्मक शक्ति
१२. स्फूर्ति और मस्ती से भरा बुढ़ापा
१३. सर्वतोमुखी सहकारिता
१४. परिवार को सुव्यवस्थित कैसे बनाएँ ?
१५. सफल जीवन के कुछ स्वर्णिम सूत्र
१६. अनाचार से कैसे निपटें ?
१७. समग्र स्वास्थ्य-संवर्द्धन कैसे ?
१८. नारी जागरण अभियान
१९. स्रष्टा का परम प्रसाद—प्रखर प्रज्ञा
२०. प्रगतिशील स्वावलंबन
२१. विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वित स्वरूप
२२. विवेकसम्मत दान एक पुण्य प्रक्रिया
२३. सभ्यता का शुभारंभ
२४. सशक्तता और सुसंस्कारिता
२५. संस्कार-परंपरा का पुनर्जीवन
२६. विचार-क्रांति के दीपयज्ञ—भाग एक
२७. विचार-क्रांति के दीपयज्ञ—भाग दो
२८. नारी उत्थान की समस्या और समाधान
२९. समयदान ही युगधर्म—प्रथम भाग
३०. समयदान ही युगधर्म—भाग दो
३१. इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य—१
३२. इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य—२
३३. नवनिर्माण की पृष्ठभूमि
३४. गरीबी भगाएँ—गरिमा बढ़ाएँ
३५. युगगायन संकीर्तन—भाग एक
३६. युगगायन (गरिमागान)—भाग दो
३७. युगगायन (गरिमागान)—भाग तीन
३८. भाषण एवं जनगायन की प्रक्रिया
३९. युग की माँग—प्रतिभा परिष्कार, भाग एक
४०. युग की माँग—प्रतिभा परिष्कार, भाग दो
४१. जीवन-साधना का स्वर्णिम सूत्र
४२. सतयुग की वापसी
४३. इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण
४४. नवयुग का मत्स्यावतार
४५. संजीवनी विद्या का विस्तार
४६. समस्याएँ आज की—समाधान कल के
४७. मन:स्थिति बदले तो परिस्थितियाँ बदलें
४८. व्यवस्था-बुद्धि की गरिमा
४९. जीवन को सार्थक बनाने का सही सुयोग (क्र० १)
५०. सशक्त शक्ति, उद्‌गम से संबंध साधें (क्र० २)
५१. उच्चस्तरीय परमार्थ—समयदान (क्र० ३)
५२. ऐसे बनें जैसा दूसरे को बनाना है (क्र० ४)
५३. सृजनशिल्पी की आचारसंहिता (क्र० ५)
५४. विचार-क्रांति अपने समय की सबसे बड़ी आवश्यकता (क्र० ६)
५५. सही और सशक्त तीर्थयात्रा (क्र० ७)
५६. सामयिक लोक-शिक्षण व्यवस्था (क्र० ८)
५७. दीपयज्ञों की दीपमालिका और ज्योति ज्वाला (क्र० ९)
५८. आड़े समय की विषमता और जिम्मेदारी अनुभव करें (क्र० १०)
५९. विवाह पद्धति
६०. भाषण एवं जनगायन की प्रक्रिया
६१. मसालावाटिका से घरेलू उपचार
६२. प्रज्ञा परिजनों में नवजीवन का संचार अपने समय की सर्वोपरि आवश्यकता
६३. युगनेतृत्व हेतु आमंत्रण

६४. २१वीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य
६५. २१वीं सदी की युगचेतना का उद्‌गम्‌—शांतिकुंज
६६. मनुष्य जाति पर गहराते संकट के बादल
६७. प्रज्ञा सम्मेलन—प्रवचन
६८. गायत्री नगर में बसने हेतु भावभरा आमंत्रण
६९. तीर्थसेवन से आत्मपरिष्कार
७०. जनजाग्रति का अभिनव अभियान
७१. शांतिकुंज हरिद्वार—सचित्र परिचय
७२. दीपयज्ञ मंत्रा:
७३. गायत्री तत्त्वबोध
७४. इस दलदल से किसी प्रकार उबरें तो
७५. जीवन-संपदा को हेय प्रयोजनों में न गँवाएँ
७६. आधी जनसंख्या को उबारने के लिए कुछ किया ही जाए
७७. नारी दबी-पिसी स्थिति में न रहे
७८. परिवर्तन की आरंभिक प्रयास-प्रक्रिया
७९. नर-नारी के बीच बैठा सर्वभक्षी महासर्प
८०. अवरोधों से किसी प्रकार तो निपटें ही
८१. कुदृष्टि के लिए कहीं कोई गुंजाइश न रहे
८२. भारतीय नारी की समस्याएँ और उनके समाधान
८३. समाज निर्माण का कार्य इस प्रकार आरंभ हो
८४. आरंभ अपने से और अपने परिवार से करें
८५. कुछ कर गुजरने से पूर्व आवश्यक तैयारी तो कर ही लें
८६. एक लाख युगशिल्पियों का उत्पादन एवं प्रशिक्षण
८७. सेवाधर्म अपनाने में सर्वतोमुखी श्रेय-साधन
८८. उन्मत्त हाथी की तरह न जिएँ

१९९०

१. इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा ?
२. व्यक्तित्व परिष्कार की साधना—अद्‌भुत और अनुपम सुयोग
३. परिवार का पालन ही नहीं, निर्माण भी
४. ज्ञानयोग की साधना
५. कठिनाइयों की अग्निपरीक्षा
६. सफल दांपत्य-सुखी जीवन
७. सच्ची आस्तिकता अपनाएँ
८. मनोरंजन का मनोविज्ञान
९. महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण
१०. प्रज्ञा अवतार की विस्तार-प्रक्रिया
११. शिक्षा ही नहीं, विद्या भी
१२. नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी
१३. समूहगान—भाग एक
१४. आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना
१५. भाव-संवेदनाओं की गंगोत्तरी
१६. परिवर्तन के महान क्षण
१७. नारी अभ्युदय का नवयुग
१८. अनाचार से कैसे निपटें ?
१९. प्रगतिशील स्वावलंबन
२०. विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वित स्वरूप
२१. समग्र स्वास्थ्य-संवर्द्धन कैसे ?
२२. परिष्कृत व्यक्तित्व एक सिद्धि, एक उपलब्धि
२३. युग-यज्ञपद्धति
२४. महिला जाग्रति अभियान
२५. प्रज्ञापुत्रों को इतना तो करना ही है

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त बहुत-सी पुस्तकों का पता नहीं चल सका है, उनकी खोज जारी है। कितनी ही पुस्तकें ऐसी हैं, जो अभी प्रकाशित नहीं हुई हैं। उनमें से प्रमुख हैं—'प्रज्ञा पुराण' के शेष चौदह खंड, 'गीता विश्व कोश' के अठारह खंड एवं सावित्री महाविज्ञान आदि।

❑❑❑